संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-23 अंक- 62
पृष्ठ 8
गुरूवार
19 नवम्बर 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- क्या सच में लकड़ी छूने से...

विचार- ईरान के खिलाफ जंग के अगले चरण...

खेल- ट्रेविस हेड को रिलीज करने के पीछे...

जम्मू-कश्मीर: लश्कर का आखिरी स्थानीय आतंकी ढेर

अमित शाह ने जवानों को दी बधाई, बोले- बेहतर तालमेल का परिणाम

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार को जम्मू-कश्मीर के कुलगाम में लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) के आखिरी ज्ञात सक्रिय स्थानीय आतंकवादी लतीफ भट के मारे जाने पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने बताया कि बुधवार तड़के चलाए गए अभियान में सुरक्षा बलों ने लतीफ भट को मार गिराया। वहीं, उसका एक आतंकी सहयोगी उमर निसार भी इससे एक दिन पहले कुलगाम में मारा गया था।



अमित शाह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर बताया कि इस पूरे अभियान को जम्मू-कश्मीर पुलिस (जेकेपी), भारतीय सेना, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) और खुफिया एजेंसियों के समन्वित प्रयासों से अंजाम दिया गया। गृह मंत्री ने कहा कि पूरे ऑपरेशन के दौरान सुरक्षा एजेंसियों के बीच बेहद उच्च स्तर का तालमेल देखने को मिला। उन्होंने जम्मू-कश्मीर पुलिस, सेना, सीआरपीएफ और खुफिया एजेंसियों के बहादुर जवानों को सलाम करते हुए कहा कि देश उनके साहस को नमन करता है। आतंकी लतीफ भट के मारे जाने के बाद भाजपा नेता रविंदर रैना ने कहा, हमारे जवानों ने लश्कर-ए-तैयबा के कुख्यात आतंकवादी लतीफ भट को मार गिराकर एक बड़ी कामयाबी हासिल की है, जिस पर लाखों रुपये का इनाम था। सुरक्षा बलों ने उसे सरेंडर करने का पूरा मौका दिया, यहां तक कि उसके परिवार वालों को भी बुलाया, लेकिन वह एक मस्जिद के अंदर छिप गया। हमारी सेना, जम्मू-कश्मीर पुलिस और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने मस्जिद का पूरा सम्मान बनाए रखा; इसकी दीवारों पर एक भी गोली नहीं लगी और उसे तभी मार गिराया गया जब उसने भागने की कोशिश की। बता दें के सुबह आतंकी लतीफ भट को सुरक्षाबलों ने बार-बार आत्मसमर्पण करने के लिए कहा, लेकिन उसने मना कर दिया।

2027 में प्रचंड बहुमत से फिर बनेगी भाजपा की सरकार : योगी

मुख्यमंत्री ने सपा-कांग्रेस के परिवारवाद, जातिवाद, गुंडाराज और तुष्टीकरण पर साधा निशाना



लखनऊ, संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार तीसरी बार बनने जा रही है। हैट्रिक ही नहीं लगेगी, यह रिकॉर्ड भी बनेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व, भाजपा के करोड़ों समर्पित कार्यकर्ताओं की शक्ति और डबल इंजन सरकार की उपलब्धियों के दम पर पार्टी जनता के बीच जाएगी और जनता-जनार्दन का आशीर्वाद प्राप्त करेगी। एक कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा पूरी दमदारी के साथ उत्तर प्रदेश में तीसरी बार पूर्ण बहुमत की, प्रचंड बहुमत की सरकार बनाने में सफल होगी। किसी को कोई संदेह नहीं होना चाहिए। उत्तर प्रदेश की नई पहचान पर जिसे भी गौरव की अनुभूति होती है, वह भाजपा सरकार को तीसरी बार मौका देगा। उन्होंने कहा कि वह प्रदेश के पहले ऐसे मुख्यमंत्री हैं, जिन्होंने पांच वर्ष लगातार मुख्यमंत्री रहने के बाद फिर चुनाव जीता और दोबारा पांच वर्ष तक अपनी सरकार लगातार चलाई। भाजपा पहले भी कई रिकॉर्ड तोड़ चुकी है और इस बार भी नया रिकॉर्ड बनाएगी। मुख्यमंत्री योगी ने विपक्षी दलों, विशेषकर समाजवादी पार्टी और कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा कि कल्पना करिए, क्या इंडी गठबंधन की किसी सरकार में या समाजवादी पार्टी की सरकार में यह सुशासन यूपी के अंदर या किसी अन्य राज्य के अंदर कोई देख सकता था? भारतीय जनता पार्टी आज दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है। यह करोड़ों कार्यकर्ताओं के कैडर बेस वाली पार्टी है, जिसमें किसी परिवार का नहीं, बल्कि हर कार्यकर्ता के मूल्यों, सिद्धांतों और आदर्शों का महत्व है। इन्हीं कार्यकर्ताओं के दम पर उत्तर प्रदेश को सुरक्षित बनाने का लक्ष्य पूरा हुआ है। भयमुक्त वातावरण होना चाहिए और सुरक्षा सबको मिलनी चाहिए। सपा और कांग्रेस की अराजकता, उनका जंगलराज, उनका गुंडाराज, थाना, तहसील, जिला को बंधक बनाने की उनकी कुत्सित चेष्टाएं जो रही हैं, जब भी उनको मौका मिला है, इस कानून-व्यवस्था की ध्वस्त स्थिति, कर्फ्यू, दंगा, लूट-खसोट, इन सभी मुद्दों को लेकर के भारतीय जनता पार्टी अपने सहयोगियों के साथ इस चुनाव में जाएगी। 80-20 के मुद्दे पर पूछे गए सवाल के जवाब में कहा कि भारतीय जनता पार्टी ये उपलब्धियां पहले भी हासिल कर चुकी है। मुख्यमंत्री ने समाजवादी पार्टी के शासनकाल पर हमला करते हुए कहा कि योजनाओं पर ही परिवार का वर्चस्व नहीं था, बल्कि यूपी की पूरी राजनीति तुष्टीकरण की पराकाष्ठा पर चल रही थी। कानून-व्यवस्था में बदलाव को रेखांकित करते हुए मुख्यमंत्री ने एचसीएल टेक के लखनऊ कैंपस का उदाहरण दिया।

पेज नंबर 201 पर विवाद: शिवसेना नेताओं ने फाड़ी सोनिया गांधी की किताब, बैन की मांग



मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र में बुधवार को एक नया राजनीतिक विवाद खड़ा हो गया। शिवसेना ने कांग्रेस की वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी की किताब 'बिलॉन्गिंगः अ जर्नी ऑफ लव' पर प्रतिबंध लगाने की मांग की है। यह मांग किताब में स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर के बारे में की गई टिप्पणियों को लेकर की गई है। मुंबई में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान, शिवसेना के कई नेताओं ने शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे की चुप्पी पर सवाल उठाए।

उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री ने सावरकर के अपमान पर एक शब्द भी नहीं कहा है। इसके बजाय, उन्होंने कहा कि उद्धव ने कांग्रेस से यह किताब स्वीकार कर ली है। शिवसेना नेताओं ने कहा कि सोनिया गांधी ने अपनी किताब में सावरकर का अपमान किया है।

उन्होंने किताब में लिखा है कि सावरकर ने अंग्रेजों से माफी मांगी थी और उन्हें पत्र लिखे थे। यही आरोप लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी भी कई बार लगा चुके हैं। उन्होंने महाराष्ट्र की सत्ताधारी श्महायुतिश सरकार जिसमें शिवसेना, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) शामिल हैं – से भी इस किताब पर प्रतिबंध लगाने का आग्रह किया।

शिवसेना के प्रवक्ता संजय निरुपम ने मीडिया ब्रीफिंग में कहा उन्होंने किताब में जो बातें लिखी हैं, वे असल में प्रेम की यात्रा नहीं, बल्कि नफरत की यात्रा हैं... उनके मन में वीर सावरकर के प्रति लगातार नफरत रही है जो भारत के महान क्रांतिकारी और महाराष्ट्र के ऐसे सपूत हैं, जिन्हें पूरा राज्य देवता की तरह पूजता है।

उन्होंने आगे कहा उनके दिल में हिंदुओं के प्रति पक्की नफरत है; इसी किताब में उन्होंने शायद यह भी लिखा है कि बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद उनकी आँखों में आँसू आ गए थे। लेकिन, जब भगवान राम के मंदिर को तोड़कर वहाँ मस्जिद बनाई गई थी, तो उस घटना से उन्हें कोई दुख नहीं हुआ।

अपने संस्मरण में, सोनिया ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और सावरकर की आलोचना की है। उन्होंने दावा किया कि सावरकर ने अंग्रेजों से माफ़ी मांगी थी, जो उनके औपनिवेशिक आका थे। इसके विपरीत, उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेताओं ने अंग्रेजों के हाथों हमले और जेल की सजा झेली थी।

जायरीनों के मोबाइल चुराने वाले 5 शातिर गिरफ्तार, 25 फोन बरामद

अजमेर, एजेंसी। अजमेर शरीफ दरगाह में दर्शन के लिए आने वाले जायरीनों के मोबाइल फोन चोरी करने के आरोप में एक गिरोह के पांच सदस्यों को मंगलवार को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि आरोपियों के पास से चोरी के 25 मोबाइल फोन बरामद किए हैं, जिनकी अनुमानित कीमत करीब छह लाख रुपये है। पुलिस ने बताया कि सीसीटीवी फुटेज, तकनीकी विश्लेषण और स्थानीय लोगों तथा होटल संचालकों से मिली जानकारी के आधार पर जांच के बाद आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। आरोपियों पर सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह में आने वाले जायरीनों को निशाना बनाने और उनकी जेब से मोबाइल फोन चोरी करने का आरोप है। पुलिस ने बताया, गिरफ्तार आरोपियों की पहचान दरगाह थाना क्षेत्र निवासी मोहम्मद आमिर (20), मोहम्मद गयासुद्दीन (20), फरदीन खान (21), शेख फरहान आलम (23) और मोहम्मद शाहिद (21) के रूप में हुई है।

आमंत्रण पत्र

सम्मान समारोह एवं काव्य गोष्ठी

दिनाँक - 20 नवम्बर 2026 दिन - शुक्रवार
समय - अपराह्न 2 बजे से



श्री अशोक कुमार स्नेही सम्मान

मुख्य अतिथि
प्रो0 रवि कुमार

अध्यक्ष
मारुफ शायर अनवर अब्बास

विशिष्ट अतिथि
डा0 प्रदीप चित्राँशी

संचालन - श्री उमेश श्रीवास्तव (दैनिक/साप्ताहिक)
आयोजन - स्नेही काव्य मंच-प्रयागराज
अध्यक्ष - मनीष कुमार
साहित्यिक संयोजक - अलका श्रीवास्तव
कार्यक्रम संयोजक - अलका श्रीवास्तव, मनीष कुमार
स्थान - हिन्दुस्तान एकेडमी (गांधी सभागार) प्रयागराज

उपरोक्त कार्यक्रम में आप सादर आमंत्रित हैं।

PRESS
हमेशा आपके साथ

शहर समता NEWS

दैनिक एवं साप्ताहिक हिंदी समाचार पत्र

शहर समता
संयम ★ संस्कार ★ संतुलन

Website
www.shaharsamta.com

Subscribe on YouTube
youtube.com/@shaharsamtanews

सही खबर, सही समय पर

स्थापित 2001 • RNI Dainik UPHIN/2004/22466 • साप्ताहिक UPHIN/2001/03996 • कार्यालय 289/238 A कर्नलगंज प्रयागराज • संपर्क 9005239332, 9450482227

अतीक के शूटर के रिश्तेदार समेत तीन गिरफ्तार, एक करोड़ की स्मैक बरामद

प्रयागराज। शहर में अपराध और नशे का गठजोड़ एक बार फिर सामने आया है। नीरज वाल्मीकि हत्याकांड में जेल जा चुका आरोपी अब करोड़ों की स्मैक के साथ पकड़ा गया है। पुलिस ने तीन आरोपियों के कब्जे से 515 ग्राम स्मैक बरामद की है। शहर में नशे के कारोबार के खिलाफ कार्रवाई करते हुए फाफामऊ पुलिस और गंगानगर जोन की सर्विलांस टीम ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इनके कब्जे से 515 ग्राम स्मैक बरामद हुई है, जिसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत करीब 1.03 करोड़ रुपये आंकी गई है। गिरफ्तार आरोपियों में माफिया अतीक अहमद के शूटर अख्तर का रिश्तेदार सनाउल्लाह उर्फ रानू भी शामिल है। पुलिस के मुताबिक, आरोपी प्रयागराज से लेकर गाजियाबाद समेत कई शहरों में नशे का नेटवर्क चला रहे थे।

डीसीपी गंगानगर सोनम कुमार ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली थी कि कुछ लोग मलाक हरहर स्थित एक कार्यालय के पास स्मैक की बड़ी खेप लेकर आने वाले हैं। इस पर पुलिस और सर्विलांस टीम ने घेराबंदी कर तीनों को गिरफ्तार कर लिया। पकड़े गए आरोपियों की पहचान पुराना कटरा निवासी सनाउल्लाह उर्फ रानू, मनोज बारी और धूमनगंज के हरवारा निवासी मोहम्मद कैफ के रूप में हुई है। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि स्मैक की खेप धूमनगंज के ताड़बाग इलाके से लाई जाती थी। बरामद खेप को गाजियाबाद भेजने की तैयारी थी। आरोपियों ने पूछताछ में लकी नाम के व्यक्ति का भी नाम लिया है। उसे एक दिन पहले ही कैंट पुलिस ने 10 ग्राम स्मैक के साथ गिरफ्तार कर जेल भेजा था। वहीं, दो दिन पहले धूमनगंज के ताड़बाग में पुलिस आयुक्त पीयूष मोर्डिया ने भी कार्रवाई करते हुए एक महिला को गिरफ्तार किया था। पुलिस अब इन सभी मामलों के बीच संभावित कड़ियों और नशे के नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों की जानकारी जुटा रही है। पुलिस के मुताबिक, सनाउल्लाह उर्फ रानू वर्ष 2018 में कैंट क्षेत्र में हुए नीरज वाल्मीकि हत्याकांड में जेल जा चुका है। नीरज वाल्मीकि छोटा राजन गिरोह का शूटर था। दुर्गा पूजा पंडाल के भीतर उसकी बम और गोली मारकर हत्या कर दी गई थी।

पुलिस के अनुसार, मनोज बारी पर आठ और रानू पर 15 प्राथमिकी दर्ज हैं। दोनों के खिलाफ दो बार गैंगस्टर की कार्रवाई भी हो चुकी है। दोनों कर्नलगंज थाने के हिस्ट्रीशीटर बताए गए हैं। दो हिस्ट्रीशीटरों के नशे के कारोबार में शामिल होने के खुलासे ने पुलिस की निगरानी व्यवस्था पर भी सवाल खड़े किए हैं। सिविल लाइंस निवासी होटल कारोबारी संतोष गुप्ता और उनके परिवार को अज्ञात मोबाइल नंबरों से जान से मारने की धमकी मिली है। आरोप है कि फोन करने वाले खुद को बांग्लादेशी–पाकिस्तानी आतंकी संगठनों से जुड़ा बताकर धमकी दे रहे हैं। साथ ही उनके परिवार के सदस्यों के नाम अतीक अहमद से जोड़कर जेल भिजवाने की धमकी देते हैं। सिविल लाइंस पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। एफआईआर के मुताबिक, पिछले कुछ दिनों से अलग–अलग नंबरों से कारोबारी और उनके कर्मचारियों के पास कॉल आ रही हैं। फोन करने वाले कभी खुद को प्रतापगढ़, प्रयागराज तो कभी छिंदवाड़ा के जंगलों का निवासी बताते हैं। होटल और कार्यालय का पता बताकर वहां पहुंचने और सभी को मार डालने की बात कहते हैं। धमकाने वाले खुद को नक्सली, माफिया और बांग्लादेशी–पाकिस्तानी आतंकी संगठनों से जुड़ा बताते हैं। छिंदवाड़ा के जंगलों में लोगों की हत्या करने और अतीक अहमद से जुड़े लोगों के माध्यम से झूठे मुकदमे में फंसाने की बात भी कही जाती है। कर्मचारियों को उनके नाम लेकर डराया जा रहा है। परिवार की महिलाओं के खिलाफ अभद्र भाषा का इस्तेमाल करने के साथ सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक पोस्ट डालने की धमकी दी है। पीड़ित ने पुलिस को कॉल की ऑडियो रिकॉर्डिंग, व्हाट्सएप संदेशों के स्क्रीनशॉट और संदिग्ध नंबरों का ब्योरा सौंपा है। सिविल लाइंस थाना प्रभारी रामाश्रय यादव ने बताया कि मोबाइल नंबर के आधार पर आरोपियों की पहचान की जा रही है।

रेलवे ग्रुप डी भर्ती में विसंगति का आरोप, रात भर धरने पर बैठे रहे अभ्यर्थी

प्रयागराज। रेलवे की ग्रुप डी भर्ती में पारदर्शिता और आरक्षण के लाभ को लेकर अप्रेंटिस अभ्यर्थियों का आक्रोश बढ़ता जा रहा है। अपनी मांगों को लेकर अभ्यर्थी लगातार दूसरे दिन भी उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय के गेट पर डटे रहे। रातभर धरना देने के बाद बुधवार को भी उन्होंने आंदोलन जारी रखा। हालांकि, रेलवे ने भर्ती प्रक्रिया में किसी तरह की गड़बड़ी से इन्कार किया है। रेलवे ग्रुप डी भर्ती प्रक्रिया में कथित विसंगतियों और नियमों की अनदेखी का आरोप लगाते हुए रेलवे अप्रेंटिस अभ्यर्थियों ने बुधवार को भी उत्तर मध्य रेलवे (एनसीआर) मुख्यालय के गेट पर जोरदार धरना–प्रदर्शन कर रहे है। अभ्यर्थी यहां रात भर धरने पर बैठे रहे। विज्ञापन संख्या 8/24 और सीईएन 01/2019 के तहत हुई भर्ती प्रक्रिया में भेदभाव का आरोप लगा रहे है। इसके पूर्व मंगलवार को भी अधिकारियों को ज्ञापन सौंप कर पूरे मामले की उच्चस्तरीय जांच कराने की मांग उठाई थी। प्रदर्शन कर रहे अभ्यर्थियों का कहना था कि वर्ष 2019 की भर्ती में सीसीएए अभ्यर्थियों को कंप्यूटर बेस्ड टेस्ट यानी सीबीटी और एनएसी के अंकों का विस्तृत स्कोर कार्ड दिया गया था, लेकिन मौजूदा भर्ती प्रक्रिया में पारदर्शी स्कोर कार्ड जारी नहीं किया गया है। उन्होंने मांग की कि सामान्य श्रेणी की कटऑफ के बराबर या उससे अधिक अंक पाने वाले अप्रेंटिस अभ्यर्थियों को ओपन मेरिट में स्थान दिया जाए, 20 प्रतिशत अप्रेंटिस कोटे का पूरा लाभ सुनिश्चित किया जाए तथा एनएसी प्रमाण पत्र ऑनलाइन अपलोड करने के लिए एक बार फिर मॉडिफिकेशन लिंक जारी किया जाए। इसके अलावा, पूर्व सैनिकों के चयन में कटऑफ नियमों की विसंगति और पुराने–नए अप्रेंटिस बैच के अंकों की तुलना को लेकर भी सवाल खड़े किए गए। इससे पहले 6 नवंबर को भी अभ्यर्थियों ने मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय पहुंचकर विरोध दर्ज कराया था, जहां अधिकारियों के आश्वासन पर प्रदर्शन समाप्त हुआ था। अभ्यर्थियों का यह भी आरोप है कि इस पूरी प्रक्रिया में केवल अजमेर जोन नियमों का पालन कर रहा है। दूसरी ओर, उत्तर मध्य रेलवे के सीनियर पीआरओ डॉ. अमित मालवीय का कहना है कि रेलवे द्वारा पूरी पारदर्शिता के साथ निर्धारित प्रक्रिया का ही पालन किया जा रहा है और यही प्रक्रिया वर्ष 2019 में भी अपनाई गई थी, जो देश के सभी जोनल रेलवे में एक समान रूप से लागू है।

सड़क पार कर रहे बुजुर्ग की हादसे में मौत

प्रयागराज। बैरहना–कोहड़ार मार्ग पर सड़क पार करते वक्त बाइक की चपेट में आने से दरबारी लाल यादव (72) की मौत हो गई। दरबारी लाल यादव के तीन पुत्र पारसनाथ, चंद्रशेखर और मनी हैं। वह अपने सबसे छोटे बेटे मनी के साथ रहते थे। हादसे की सूचना पर कोहड़ार पुलिस मौके पर पहुंची। मेजा थाना प्रभारी धनंजय पांडेय ने बताया कि पुलिस ने दुर्घटनाग्रस्त बाइक को कब्जे में लेकर शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा। पुलिस बाइक चालक की तलाश कर रही है। तहरीर मिलने पर कठोर कानूनी कार्रवाई होगी।

मंत्री नंदी की मां विमला देवी का निधन, सीएम योगी और डिप्टी सीएम केशव मौर्य ने जताया शोक

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी की मां विमला देवी का बुधवार सुबह निधन हो गया। मंत्री ने सोशल मीडिया पर भावुक पोस्ट करके जानकारी साझा की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने भी शोक जताया। अंतिम संस्कार दोपहर बाद तीन बजे दारागंज घाट पर किया जाएगा।



उत्तर प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी की मां विमला देवी का बुधवार सुबह निधन हो गया। उनके निधन की खबर से परिवार और शुभचिंतकों में शोक की लहर दौड़ गई। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने भी उनके निधन पर गहरा दुख जताया है। वहीं, मंत्री नंदी ने सोशल मीडिया पर भावुक पोस्ट साझा कर मां को याद किया। उन्हें सांत्वना देने के लिए बड़ी संख्या में लोग बहादुरगंज स्थित उनके आवास पर पहुंच रहे हैं।

मंत्री नंदी ने अपनी पोस्ट में लिखा, श्आज मां की छाया सिर से दूर हो गई।श उन्होंने कहा कि पिता के निधन के बाद मां ने ही परिवार को संभाला था। उनका स्नेह, ममत्व और आशीर्वाद हर कठिनाई से जूझने का संबल था। उनकी उपस्थिति जीवन में ईश्वरीय मौजूदगी जैसी थी।

मंत्री नंदी ने अत्यंत वेदना के साथ मां के निधन की सूचना साझा करते हुए बताया कि अंतिम यात्रा बुधवार अपराह्न तीन बजे निज आवास बहादुरगंज से दारागंज श्मशान घाट के लिए रवाना होगी। यहां उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा।

सीएम योगी और डिप्टी सीएम केशव मौर्य ने जताया दुख

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल गुप्ता श्नंदीश की मां के निधन पर शोक व्यक्त किया। उन्होंने लिखा कि पूज्य माताजी का निधन अत्यंत दुखद है। उनकी संवेदनाएं शोक संतप्त परिजनों के साथ हैं। मुख्यमंत्री ने प्रभु श्रीराम से दिवंगत आत्मा को सद्गति और परिजनों को इस अपार दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने भी शोक जताते हुए कहा कि मंत्री नंदी की पूज्य माताजी के निधन का समाचार अत्यंत दुखद है। उनकी गहन संवेदनाएं शोकाकुल परिजनों के साथ हैं। उन्होंने प्रभु श्रीराम से दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने और परिजनों को कठिन समय में संबल प्रदान करने की प्रार्थना की। मंत्री नंदी की मां के निधन की खबर मिलने के बाद राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र से जुड़े लोगों के पहुंचने का सिलसिला जारी है। बहादुरगंज स्थित आवास पर बड़ी संख्या में लोग पहुंचकर शोक संवेदना व्यक्त कर रहे हैं।

डिप्टी सीएम केशव प्रसाद ने आवास पर पहुंचकर जताई संवेदना

मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी की माता विमला देवी के निधन की खबर पाकर डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने नंदी के आवास बहादुरगंज पहुंचकर संवेदना जताई। इसके अलावा भाजपा के कई नेताओं के साथ तमाम लोगों ने पहुंचकर संवेदना व्यक्त की।

संगम में डूबे महाराष्ट्र के श्रद्धालु का 48 घंटे बाद मिला शव, उसी स्थान पर गहराई में मिला

प्रयागराज। संगम में स्नान की आस्था भरी यात्रा महाराष्ट्र के एक परिवार के लिए कभी न भूलने वाला दुख बन गई। सोमवार को डूबे दामाजी महादेव पाकमोडे का शव बुधवार को उसी स्थान पर मिला, जहां वह लापता हुए थे। दो दिन से पत्नी और बच्चे उनकी सलामती की उम्मीद लगाए बैठे थे।

संगम में स्नान के दौरान डूबे महाराष्ट्र के श्रद्धालु दामाजी महादेव पाकमोडे (45) का शव 48 घंटे बाद बुधवार को बरामद कर लिया गया। जिस स्थान पर वह डूबे थे, उसी जगह गहराई में उनका शव मिला। दो दिनों से गोताखोर और जल पुलिस उनकी तलाश में जुटी थी। शव मिलने के बाद परिवार में कोहराम मच गया। पत्नी, बच्चों और अन्य परिजनों का रो–रोकर बुरा हाल है।

बता दें कि सोमवार सुबह करीब नौ बजे संगम नोज के पास स्नान के दौरान दामाजी गहरे पानी में डूब गए थे। आरोप है कि नाविकों ने श्रद्धालुओं को जल्दबाजी में उतारने के चक्कर में सुरक्षा इंतजामों की अनदेखी की। नाव से उतरते समय सुरक्षा जाली के पास लगी लकड़ी की बल्ली टूट गई, जिससे दामाजी का संतुलन बिगड़ गया और वह तेज बहाव की चपेट में आ गए।

दामाजी को डूबता देख आसपास मौजूद लोगों ने करीब 15 मिनट तक मदद की गुहार लगाई, लेकिन कोई उन्हें बचाने के लिए आगे नहीं आया। सूचना मिलने पर पहुंचे गोताखोरों और जल पुलिस ने कई घंटे तक तलाश अभियान चलाया, लेकिन पहले दिन उनका पता नहीं चल सका। इसके बाद भी लगातार खोजबीन जारी रही।

21 सदस्यों के साथ तीर्थयात्रा पर आया था परिवार

महाराष्ट्र के चंद्रपुर जिले के रहने वाले दामाजी पत्नी मनीषा, 12 वर्षीय बेटे और छह साल की बेटी समेत परिवार के 21 सदस्यों के साथ तीर्थयात्रा पर आए थे। परिवार 14 नवंबर को ट्रैवलर बस से रवाना हुआ था। 15 नवंबर को मैहर में दर्शन–पूजन करने के बाद सोमवार सुबह प्रयागराज पहुंचा था।

दामाजी के साले गोपाल ने बताया कि परिवार के सभी सदस्य सोमवार सुबह करीब नौ बजे किला घाट से दो नावों पर सवार होकर संगम पहुंचे थे। नाव संगम नोज के पास पहुंची तो परिवार के लोग एक–एक कर उतरने लगे। इसी दौरान दामाजी स्नान के लिए नीचे उतरे। आरोप है कि सुरक्षा जाली के पास लगी लकड़ी की बल्ली टूटने से उनका संतुलन बिगड़ गया और वह गहरे पानी में चले गए।

उन्हें डूबता देख परिवार के लोग चीखने–चिल्लाने लगे। करीब 15 मिनट तक मदद की गुहार लगाई गई, लेकिन कोई उन्हें बचाने के लिए नदी में नहीं उतरा। कुछ ही देर में वह पानी में लापता हो गए। दो दिन तक चली तलाश के बाद बुधवार को उसी स्थान पर उनका शव बरामद हुआ।

बेसिक शिक्षा परिषद : परीक्षा में फेल हुआ सिस्टम, रसोइया बनीं कक्ष निरीक्षक

प्रयागराज। स्कूलों में शिक्षक नहीं और परीक्षा कराने की जिम्मेदारी रसोइया के कंधों पर। जनगणना ड्यूटी में शिक्षकों के चले जाने से परिषदीय विद्यालयों की व्यवस्था प्रभावित होने लगी है। प्रयागराज के पुराना कटरा स्थित कंपोजिट विद्यालय में रसोइया कक्ष निरीक्षक की भूमिका निभाती नजर आईं।

प्रदेश के परिषदीय स्कूलों में मंगलवार से अर्धवार्षिक परीक्षाएं शुरू हुईं, लेकिन पहले ही दिन पूरी व्यवस्था बेपटरी दिखी। परीक्षा की जिम्मेदारी संभालने वाले शिक्षक कहीं मोबाइल में व्यस्त नजर आए, तो कहीं जनगणना ड्यूटी के कारण नदारद रहे। हैरानी की बात यह रही कि स्कूलों में खाना बनाने वाली रसोइया कक्ष निरीक्षक की भूमिका निभाती दिखीं। अमर उजाला की टीम ने जब कुछ विद्यालयों की हकीकत परखी, तो परीक्षा का पूरा सिस्टम ही फेल नजर आया।

सीन एकः उच्च प्राथमिक विद्यालय पुराना कटरा द्वितीय, (कंपोजिट) में कक्षा एक से आठवीं तक के बच्चों की परीक्षा चल रही थी। रसोईया लीला देवी कक्षा छह में कक्ष निरीक्षक की ड्यूटी कर रही थीं। वह बच्चों को प्रश्न पत्र बांट रही थीं। बीच बीच में शोर न मचाने के लिए भी बच्चों को मना कर रही थीं। प्रधानाध्यापक ममता शर्मा की देखरेख में शिक्षामित्र नीलम मिश्रा व एक डीएलएड प्रशिक्षु भी अलग कक्षाओं में जाकर प्रश्न पत्र व उत्तरकापियां बांट रही थीं। बच्चों की संख्या कम थी तो प्रधानाध्यापक ने रसोइया को आसपास के पंजीकृत बच्चों को बुलाने के लिए भेज दिया। प्रधानाध्यापक ने कहा, ज्यादातर शिक्षकों के जनगणना ड्यूटी में जाने की वजह से दिक्कतें हो रही हैं।

सीन–दोः उच्च प्राथमिक विद्यालय राजापुर प्रथम (कंपोजिट) में भी अव्यवस्थाओं के बीच परीक्षाएं चल रही थीं। हेडमास्टर अमान अपने कार्यालय में बैठे रहे। कक्षा–छह में एक–एक टेबल पर चार से पांच बच्चे बैठकर एक दूसरे की कॉपी देखते हुए परीक्षा दे रहे थे। कक्ष में कोई शिक्षक नहीं मौजूद था। पूछने पर पता चला कि क्लास टीचर अंशू हैं। जनगणना ड्यूटी में होने के नाते शिक्षिका ममता को लगाया गया था, लेकिन वह ऑफिस में थीं। हेडमास्टर अमान ने कहा, ज्यादातर शिक्षकों की ड्यूटी जनगणना में लगा दी गई है तो परीक्षा कौन कराएगा? हम जनगणना में हैं, हमारी जिम्मेदारी नहीं है। इसी तरह शिक्षामित्र मीनाक्षी कुर्सी पर बैठकर मोबाइल चलाती रहीं और बच्चे आपस में शोरगुल करते परीक्षा देते रहे। सहायक अध्यापिका अनुरागिनी परीक्षा खत्म होने के बाद बच्चों को स्मार्ट बोर्ड कुछ समझा रही थीं।

न परीक्षा की टाइमिंग न कोई नियम

उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद के सचिव सुरेंद्र कुमार तिवारी की ओर से जारी परीक्षा कार्यक्रम के अनुसार, परीक्षा दो पालियों में होनी है। पहली पाली की परीक्षा सुबह 9रू30 बजे से 11रू30 बजे तक व दूसरी पाली 12रू30 बजे से 2रू30 बजे हो रही है। लेकिन, स्कूलों में परीक्षा के लिए कोई टाइमिंग ही नहीं दिखी। अपने हिसाब से सुविधानुसार परीक्षाएं कराई जा रही थीं। कुछ जनपदों से भी ऐसी शिकायतें आई हैं जहां प्रश्नपत्र ही पहली पाली में नहीं पहुंचे। परीक्षा 21 नवंबर तक होनी है। इसमें प्रदेश भर के परिषदीय स्कूलों के तकरीबन 1.35 करोड़ छात्र–छात्राएं पंजीकृत हैं।

क्या कहते हैं अधिकारी

परीक्षा को लेकर प्रधानाध्यापक व शिक्षकों की लापरवाही कतई बर्दाश्त नहीं होगी। परीक्षा को पारदर्शिता से न कराने वाले जिम्मेदारों पर कार्रवाई होगी। रसोईया से ड्यूटी कराना गलत है। जनगणना के साथ परीक्षा कार्य भी करने के लिए शिक्षकों से कहा गया है। जो भी शिकायतें मिल रही हैं उन पर एक्शन लिया जाएगा। –अनिल कुमार, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, प्रयागराज

स्कूल में रसोइया संभाल रहीं परीक्षा की जिम्मेदारी



दाल, तेल, चीनी और महंगी, रसोई का बिगड़ा बजट

प्रयागराज। तीन महीने से चना, अरहर दाल और सरसों तेल के दामों में लगातार वृद्धि हो रही है। आटा, मैदा और चीनी सहित अन्य खाद्य पदार्थों के दाम भी बढ़ते जा रहे हैं। इससे आम आदमी की रसोई का बजट प्रभावित हुआ है और मुश्किलें बढ़ गई हैं।

अरहर की दाल फुटकर बाजार में 150 रुपये प्रति किलोग्राम बिक रही है। चने की दाल भी 100 से 110 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई है। एक माह पहले इसकी कीमत 75 से 80 रुपये प्रति किलोग्राम थी। सरसों के तेल के दाम भी तेजी से बढ़े हैं। सितंबर के पहले सप्ताह में 15 लीटर सरसों तेल 2370 रुपये का था। आठ अक्तूबर को यह बढ़कर 2920 रुपये हो गया।

थोक कारोबारी सुभाष केसरवानी के अनुसार थोक बाजार में अरहर दाल 100 किलोग्राम की कीमत सितंबर में 11500 रुपये थी। अक्तूबर के पहले सप्ताह में यह 13000 रुपये हो गई और वर्तमान में 13800 रुपये है। चना दाल 100 किलोग्राम सितंबर में 8000 रुपये थी, जो अक्तूबर में 9000 रुपये हुई। नवंबर में मंगलवार को यह बढ़कर 13800 रुपये हो गई है। मूंग की दाल भी थोक में 11 हजार रुपये प्रति क्विंटल बिक रही है।

फुटकर कारोबारी अंकित केसरवानी के अनुसार, चीनी 70 रुपये प्रति किलोग्राम बिक रही है। सरसों का तेल 210 रुपये प्रति लीटर के भाव पर उपलब्ध है। आटा 100 किलोग्राम का थोक दाम वर्तमान में 3240 रुपये है, जो फुटकर में 36 रुपये प्रति किलोग्राम है। मैदा का थोक दाम 3300 रुपये प्रति 100 किलोग्राम और फुटकर दाम 40 रुपये प्रति किलोग्राम है।

निर्माण कार्यों की धूल सांस के मरीजों की दुश्मन

प्रयागराज। शहर में सड़क और पुल निर्माण के दौरान मानकों की अनदेखी से फैल रहा धूल का गुबार सांस रोगियों के लिए बड़ा संकट बन गया है। बदलते मौसम के बीच यह स्थिति क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी) से पीड़ित मरीजों के लिए गंभीर खतरा है। एसआरएन अस्पताल के टीबी चेस्ट विभाग में रोजाना चार से पांच मरीज सांस संबंधी परेशानी लेकर पहुंच रहे हैं। डॉक्टरों के मुताबिक, निर्माण कार्यों के दौरान मिट्टी, सीमेंट, बालू और अन्य सामग्री से निकलने वाले महीन कण हवा में घुलकर सांस के जरिये शरीर में पहुंचते हैं। लंबे समय तक इनके संपर्क में रहने से श्वसन तंत्र प्रभावित होता है। विशेष रूप से सीओपीडी के मरीजों में खांसी, सांस फूलने, सीने में जकड़न और बलगम जैसी समस्याएं बढ़ सकती हैं। कई बार प्रदूषण और धूल के कारण बीमारी का अचानक बढ़ना भी संभव है।

मौसम में उतार–चढ़ाव भी सांस के मरीजों की परेशानी बढ़ा सकता है। तापमान में बदलाव, ठंडी हवा और वातावरण में मौजूद प्रदूषक कण श्वसन नलिकाओं को प्रभावित करते हैं। ऐसे में निर्माण स्थलों के आसपास रहने वाले बुजुर्गों, बच्चों और पहले से सांस संबंधी बीमारी से जूझ रहे लोगों को अधिक सतर्क रहने की जरूरत है। यह फेफड़ों की एक गंभीर और लंबे समय तक चलने वाली (क्रोनिक) बीमारी है। इसमें फेफड़ों में हवा का प्रवाह बाधित हो जाता है और सांस लेना मुश्किल हो जाता है।

ठंड में बरतें सावधानी

–बाहर निकलते समय चेहरे पर स्कार्फ या मास्क पहनें ताकि फेफड़ों तक पहुंचने वाली ठंडी हवा थोड़ी गर्म और नम हो सके।

–बहुत ज्यादा ठंड, कोहरे या सर्द हवाओं वाले दिनों में बिना जरूरत घर से बाहर न निकलें। सुबह के समय जब ठंड और प्रदूषण ज्यादा हो, तब टहलने से बचें।

–फ्लू और निमोनिया जैसे संक्रमण सीओपीडी के मरीजों के लिए गंभीर हो सकते हैं। अपने डॉक्टर की सलाह से फ्लू शॉट्स और निमोनिया का टीका समय पर लगवाएं।

–ठंड से बचने के लिए गर्म कपड़ों की कई परतें पहनें ताकि शरीर का तापमान सामान्य बना रहे।

–सर्दियों में शुष्क हवा के कारण बलगम गाढ़ा हो सकता है। पर्याप्त मात्रा में पानी, गुनगुना पानी या अन्य तरल पदार्थ पिएं। जरूरत पड़ने पर घर में ह्यूमिडिफायर का उपयोग करें।

–डॉक्टर की तरफ से दी गई नियमित दवाएं और आपातकालीन इनहेलर हमेशा अपने पास रखें। बिना डॉक्टर की सलाह के दवाएं बंद न करें।

– घर के अंदर लकड़ी, सिगरेट या कोयले का धुआं न होने दें। एयर प्यूरीफायर का इस्तेमाल करना फायदेमंद हो सकता है।

–बार–बार साबुन से हाथ धोएं और बीमार या सर्दी–जुकाम से पीड़ित लोगों के संपर्क में आने से बचें।

निर्माण कार्यों के दौरान नियमित पानी का छिड़काव और मलबे को ढककर रखना जरूरी है। मजदूरों को मास्क और अन्य सुरक्षा उपकरण उपलब्ध कराए जाने चाहिए। बदलते मौसम में सीओपीडी के मरीजों को विशेष सावधानी बरतने की जरूरी है। धुंध व कोहरा होने पर सुबह और शाम घर से बाहर न निकलें। अपने चिकित्सक के संपर्क में रहें। –डॉ. एडी शुक्ला, टीबी चेस्ट रोग विभाग, मोती लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज।

200 साल बाद भी इंजीनियरिंग का बेजोड़ नमूना है रानी का तालाब

प्रयागराज। सात अलग–अलग जलस्रोतों से जुड़ी व्यवस्था, चारों तरफ बने पक्के घाट और लाल ईंटों की मेहराबदार संरचनाएं... यह किसी आधुनिक निर्माण की नहीं, बल्कि फूलपुर की ऐतिहासिक धरोहर रानी के तालाब की पहचान है। अरवासी मय बहादुरगढ़ गांव में स्थित यह तालाब अपने भीतर इतिहास, स्थापत्य कला और तत्कालीन जल प्रबंधन की अनूठी कहानी समेटे हुए है। हालांकि, दो शताब्दियों से अपनी पहचान कायम रखने वाली यह धरोहर आज बदहाली का शिकार है। पानी पर काई जम गई है और कई जगह पुरानी ईंटों से बनी संरचनाएं क्षतिग्रस्त हो रही हैं। फूलपुर तहसील मुख्यालय से करीब 5 किमी उत्तर दिशा में अरवासी मय बहादुरगढ़ गांव में 100 गुणा 100 मीटर क्षेत्रफल में फैले इस विशाल तालाब का निर्माण वर्ष 1811 से 1819 के बीच रानी गोमती कुंअर ने कराया था।

तालाब के किनारे लगा पुरातत्व विभाग का शिलापट्ट भी इसके निर्माण काल की गवाही देता है। चारों तरफ बने पक्के घाट, लाल ईंटों की मेहराबदार संरचनाएं और महिलाओं की निजता को ध्यान में रखकर बनाई गई विशेष दीवारें उस समय की निर्माण शैली और दूरदर्शिता को दर्शाती हैं। रानी के तालाब की सबसे बड़ी विशेषता इसकी जल प्रबंधन प्रणाली है। ग्रामीणों ने बताया कि इसमें सात अलग–अलग जलस्रोतों से पानी पहुंचने की व्यवस्था बनाई गई थी। इसी कारण तालाब में लंबे समय तक पानी उपलब्ध रहता था। उस दौर में जल संचयन और उसके बेहतर उपयोग को ध्यान में रखकर तैयार की गई यह संरचना तत्कालीन इंजीनियरिंग का बेहतरीन उदाहरण है। स्थानीय लोगों के बीच चर्चा है कि फूलपुर कस्बे में स्थित अपने महल से रानी गोमती कुंअर यहां स्नान करने आया करती थीं। ब्रिटिश काल में यह तालाब आसपास के ग्रामीण इलाकों में सिंचाई और आजीविका का महत्वपूर्ण साधन था। इसके पानी का उपयोग खेती–किसानी के साथ ग्रामीणों की दैनिक जरूरतों में भी होता था।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के तीन स्वयंसेवकों का पूर्व गणतंत्र दिवस परेड के लिए हुआ चयन

प्रयागराज। 21 से 30 नवंबर तक डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा में आयोजित होने वाले राज्य स्तरीय पूर्व



गणतंत्र दिवस परेड कैंप के लिए इलाहाबाद विश्वविद्यालय से कला संकाय के तीन छात्रों अमृतराज सिंह, रवि और कृष शुक्ला का चयन हुआ है। चयन के लिये क्षेत्रीय केन्द्र लखनऊ से चयनकर्ता यूथ आफिसर श्री राजेश तिवारी जी आये थे।

ये तीनों छात्र वहाँ इलाहाबाद विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करेंगे। चयनित स्वयंसेवकों ने बताया कि गणतंत्र दिवस परेड को टीवी में देखते हुए और वहाँ प्रतिभाग करने वाले नवयुवकों को प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और उच्चाधिकारियों से भेंट करते देखकर सदैव से उनके मन में इस आयोजन में प्रतिभाग के लिए उत्सुकता रही है। और आज इसके पूर्ण होने पर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की। स्वयंसेवकों ने कार्यक्रम समन्वयक प्रो. राजेश कुमार गर्ग, कार्यक्रम अधिकारियों डॉ. मनीष कुमार गौतम और डॉ. संगीता सिंह के प्रति भी आभार व्यक्त किया जिनके प्रयत्नों के कारण उनका चयन संभव हो पाया। ध्यातव्य है कि इन तीनों स्वयंसेवकों की तैयारी प्रशिक्षण का काम गणतंत्र दिवस परेड कैंप में इलाहाबाद विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व कर चुके श्री सुशील यादव जी ने किया। इसी प्रशिक्षण के कारण इन तीनों का चयन संभव हो पाया। स्वयंसेवकों को आज औपचारिक रूप से विदा करते हुए अधिष्ठाता कला संकाय प्रो. अजय जेटली ने उन्हें शुभकामनाएं दीं। राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक प्रो. राजेश कुमार गर्ग ने भी उन्हें मंगल कामना प्रदान की।

मुंगेरीलाल के हसीन सपने देख सकते हैं अखिलेश यादव-मौर्य

राहुल, अखिलेश, तेजस्वी और ममता बनर्जी देश की छवि खराब करने का कर रहे हैं प्रयास

लखनऊ, संवाददाता। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव चाहे गोरखपुर में यात्रा निकालें, चाहे सैफई में निकालें या लखनऊ में, सपा की राजनीतिक स्थिति बदलने वाली नहीं । समाजवादी पार्टी का भविष्य अंधकार में था, है और रहेगा। अखिलेश यादव 2047 तक उत्तर प्रदेश की सत्ता में आने के मुंगेरीलाल के हसीन सपने जरूर देख सकते हैं, लेकिन धरातल पर उनकी पार्टी सत्ता में नहीं आने वाली है। राहुल गांधी द्वारा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत के लोकतंत्र और चुनाव प्रक्रिया को लेकर लगाए जा रहे आरोप अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण हैं। राहुल देश की छवि को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खराब करने का प्रयास कर रहे हैं। राहुल गांधी हों, अखिलेश यादव हों, तेजस्वी यादव हों अथवा ममता बनर्जी, इन नेताओं की गतिविधियां देशहित के अनुरूप नहीं हैं। मथुरा में भारतीय जनता पार्टी की दो दिवसीय चिंतन बैठक को लेकर अखिलेश यादव की टिप्पणी पर पलटवार करते हुए कहा कि अखिलेश यादव को भाजपा की चिंता करने के बजाय अपनी पार्टी की वास्तविक स्थिति पर चिंतन करना चाहिए।

68,500 भर्ती अभ्यर्थियों ने मंत्री अनिल राजभर के आवास का घेराव किया

लखनऊ, संवाददाता। राजधानहत्री में 68,500 सहायक शिक्षक भर्ती के अभ्यर्थियों ने बुधवार को नियुक्ति की मांग को लेकर मंत्री अनिल राजभर के आवास का घेराव किया। आवास के बाहर करीब आधे घंटे तक नारेबाजी और हंगामा किया। अभ्यर्थी मांग कर रहे थे कि मंत्री बाहर आकर उनकी बात सुनें और नियुक्ति को लेकर समाधान निकालें। प्रदर्शन के दौरान अभ्यर्थियों ने जमकर नारेबाजी की। वे ऐसी क्या मजबूरी है, आरक्षण की चोरी है और पिछड़ा आयोग ने माना है, आरक्षण घोटाला है जैसे नारे लगा रहे थे। इस दौरान पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच नोकझोंक भी हुई। अभ्यर्थियों ने मंत्री के आवास के सामने थाली, घंटी और डमरू बजाकर विरोध जताया। कुछ प्रदर्शनकारी जमीन पर लेट गए और हाथ जोड़कर रोते हुए नौकरी की फरियाद करने लगे। उनका कहना था कि लंबे समय से नियुक्ति का इंतजार कर रहे हैं, लेकिन अब तक उन्हें न्याय नहीं मिला है। प्रदर्शनकारी अभ्यर्थियों का कहना है कि वर्ष 2018 में 68,500 सहायक शिक्षक भर्ती निकाली गई थी। इसमें दिव्यांग, भूतपूर्व सैनिक, अनुसूचित जाति और पिछड़ा वर्ग के अभ्यर्थियों को 5: आरक्षण का लाभ मिलना था। आरोप है कि चारों श्रेणियों के अभ्यर्थियों को आरक्षण का लाभ नहीं दिया गया और उनका परिणाम सामान्य अभ्यर्थियों के साथ घोषित कर दिया गया। अभ्यर्थियों की मांग है कि भर्ती परीक्षा के पासिंग मार्क्स में 5: की छूट देते हुए परिणाम संशोधित किया जाए। उनका कहना है कि 150 अंकों की परीक्षा में 60 अंक यानी 40: पर परिणाम संशोधित कर नई चयन सूची जारी की जाए। प्रदर्शन कर रहे नवीन ने कहा कि 8 साल से हम नौकरी के लिए भटकरहे हैं। इन्होंने बताया कि इस भर्ती में व्यापक स्तर पर आरक्षण घोटाला हुआ है। राज्य और राष्ट्र पिछला आयोग ने भी मन की घोटाला हुआ है , आरक्षण के नियमों को पालन करने का आदेश दिया।हमारी मांग यही है कि आयोग के आदेशों का पालन हो। 2018 में जब भर्ती निकली थी तो हमने फॉर्म भरा था और जब से लेकर आज तक 8 सालों से सिर्फ चप्पल घिस रहे हैं।

उत्तर मध्य रेलवे

निविदा सूचना सं. GEM/2026/B/8276162 & GEM/2026/B/8276379 दिनांक : 14.11.2026

ई-निविदा सूचना

मण्डल रेल प्रबंधक / इंजीनियरिंग / उत्तर मध्य रेलवे प्रयागराज द्वारा भारत के राष्ट्रपति के लिये एवं उनकी ओर से निम्नलिखित निर्धारित कार्यों के लिये ई-निविदाएं प्रपत्र पर दिनांक 07.12.2026 तक आमंत्रित की जाती हैं। कार्यों का विवरण निम्न प्रकार है:-

1 जोन बिड सं. : GEM/2026/B/8276162 Dated 14.11.2026

कार्यों का विवरण : सहायक मंडल इंजीनियर मिर्जापुर के अन्तर्गत वरिष्ठ खण्ड इंजीनियर मिर्जापुर के लिए 9 टन क्षमता वाले 1 नं0 ट्रक वाहन की आपूर्ति का कार्य।

अनुमानित मूल्य : ₹ 20,98,800.00	अग्रिम धन राशि मूल्य : ₹ 41,960/-
कार्य सम्पादन की अवधि : 24 माह	निविदा बंद होने की तिथि : 07.12.2026

पात्रता मापदंड के अन्तर्गत सिमिलर कार्य : सप्लाई ऑफ रोड वेहिकल्स ऑन हायरिंग बेसिस टू सेन्ट्रल/स्टेट गवर्नमेन्ट सेमी गवर्नमेन्ट बॉडीज ऑफ सेन्ट्रल/स्टेट गवर्नमेन्ट एवं पब्लिक सेक्टर अंडर टेकिंग ऑफ सेन्ट्रल/स्टेट गवर्नमेन्ट

2 जोन बिड सं. : GEM/2026/B/8276379 Dated 14.11.2026

कार्यों का विवरण : सहायक मंडल इंजीनियर / मिर्जापुर / प्रयागराज के निरीक्षण कार्य हेतु 01 अदद गैर-वातानुकूलित (नॉन-ए.सी.) चार-पहिया वाहन को किराये पर लेना।

अनुमानित मूल्य : ₹ 8,26,344.00	अग्रिम धन राशि मूल्य : ₹ 16,530/-
कार्य सम्पादन की अवधि : 24 माह	निविदा बंद होने की तिथि : 07.12.2026

पात्रता मापदंड के अन्तर्गत सिमिलर कार्य : नित

नोट:- 1. ऑनलाइन निविदा बंद होने की तिथि तक प्रस्तुत की जा सकती है। 2. उपर्युक्त ई-निविदा का पूर्ण विवरण निविदा प्रपत्र सहित वेबसाइट www.gem.gov.in पर निविदा बंद होने की तिथि तक उपलब्ध है। 2605/26 (PH)

North central railways | @CPRONCR | www.ncrindianrailways.gov.in

संस्कृत प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में छात्र-छात्राओं ने दिखाई प्रतिभा

प्रयागराज। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्याल, गंगानाथ झा परिसर, प्रयागराज द्वारा परिसर में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह कार्यक्रम का आयोजन दिनांक



14.11.2026 से 20.11.2026 पर्यन्त किया जा रहा है। उक्त कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन पुस्तकालय विभाग द्वारा किया जा रहा है। आज दिनांक 18.11.2026 दिन बुधवार को परिसरीय गंगासभागार में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताका आयोजन किया गया । परिसर के निदेशक प्रो. रामकृष्ण पाण्डेय "परमहंस" के मार्गदर्शन में आयोजित इस प्रतियोगिता में एम.ए. संस्कृत के विद्यार्थियों ने अपने ज्ञान कौशल का परिचय दिया। वेद, दर्शन, साहित्य, व्याकरण आदि विषयों के साथ ही साथ पुस्तकालय से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी प्रतिभागिता में पूछे गये प्रश्नों का विद्यार्थियों ने प्रवीणता एवं चातुर्यता के साथ उत्तर दिया। प्रतियोगियों से अंकित मिश्र ने संस्कृत एवं डॉ. श्यामसुन्दर पाण्डेय ने पुस्तकालयी ज्ञान से सम्बन्धित प्रश्न किये। प्रतियोगिता की अध्यक्षता कर रहीं पाण्डुलिपि एवं हस्तलेख विभागाध्यक्षा प्रो. अपराजिता मिश्रा ने प्रतियोगियों से निरन्तर अध्ययनरत रहते हुए ज्ञानपिपासु होने का आह्वान किया। सह आचार्य डॉ. सुरेश पाण्डेय, डॉ. शुभश्री दास प्रतियोगिता के निर्णायक रहे। उपपुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. रामरूप ने प्रतियोगियों को पुस्तकालय में अधिक समय व्यतीत करते हुए ज्ञानार्जन को प्रेरित किया। डॉ. सुरेश पाण्डेय ने सभी प्रतिभागियों के कौशल की सराहना करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। उक्त प्रतियोगिता में एम. ए. संस्कृत द्वितीय वर्ष के छात्र चन्द्रकान्त तिवारी ने प्रथम तथा एम.ए. संस्कृत प्रथम वर्ष के छात्र प्रियांशु तिवारी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। जबकि विष्णुदत्त पाण्डेय ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। एम. ए. संस्कृत द्वितीय वर्ष के छात्र शशांक ने चतुर्थ एवं अलोक पयासी ने पंचम स्थान प्राप्त कर अपने ज्ञान कौशल से परिचित कराया। परिसर के संगणक विशेषज्ञ एवं जनसम्पर्क अधिकारी राजेशकान्त तिवारी ने बताया कि इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को कार्यक्रम के सम्पूर्ति सत्र में पुरस्कृत किया जायेगा। परिसर के छात्र-छात्राओं के उत्साहपूर्ण प्रतिभाग के लिए संयोजक मण्डल के सदस्यों डॉ. श्यामसुन्दर पाण्डेय, अंकित मिश्र के साथ ही साथ शैलेन्द्र पाण्डेय तथा पुस्तकालय विभाग की अंजू मिश्रा, मंजू मिश्रा के प्रयास विशेष रूप से सराहनीय रहे। प्रतियोगिता में परिसर के समस्त छात्र-छात्राओं के साथ अभिषेक कुमार, गौरव श्रीवास्तव, सहित परिसरीय सदस्य सम्मिलित रहे। कार्यक्रम में अन्य परिसरीय सदस्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

हिंदी लेखिका संघ का दीपावली मिलन समारोह हर्षोल्लास के साथ संपन्न

जबलपुर। हिंदी लेखिका संघ द्वारा भव्य दीपावली मिलन समारोह का आयोजन हर्षोल्लास एवं आत्मीयता के साथ किया गया। समारोह में साहित्यिक परिचर्चा के साथ विभिन्न मनोरंजक खेलों का आयोजन हुआ, जिसमें महिला रचनाकारों ने बढ़-चढ़कर सहभागिता की।

कार्यक्रम में संघ अध्यक्ष डॉ. कामना कौस्तुभ, कार्यक्रम निदेशक श्रीमती अर्चना मलैया एवं मनोरंजन प्रभारी श्रीमती रेखा चौधरी की विशेष भूमिका रही। समारोह में आरती शर्मा, डॉ. छाया सिंह, छाया सक्सेना श्प्रभुश, उमा मिश्रा श्प्रीतिश, डॉ. अंबर प्रियदर्शी, ज्योति मिश्रा, चंद्रप्रकाश वैश्य, ज्योति जैन, प्रतीक्षा सेठी, मीना गुप्ता एवं रचनाकारों की विशेष उपस्थित रही। डॉ चंद्रा चतुर्वेदी ने वर्चुअल रूप से उपस्थित होकर अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित की।

आयोजित मनोरंजक खेलों में प्रतिभागियों ने पूरे उत्साह और उमंग के साथ हिस्सा लिया। श्पान की बेगमश खेल में छाया सक्सेना श्प्रभुश ने प्रथम तथा आरती शर्मा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। श्करें कोई, भरें कोईश खेल में डॉ. अंबर प्रियदर्शी प्रथम एवं उमा मिश्रा श्प्रीतिश द्वितीय रहीं।



श्एक हाथ ले, एक हाथ देंश में चंद्रप्रकाश वैश्य ने प्रथम तथा उमा मिश्रा श्प्रीतिश ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

वहीं श्देश-विदेश की यात्राश खेल में डॉ. अंबर प्रियदर्शी विजेता रहीं।

पूरे समारोह में हँसी-खुशी, उल्लास और आत्मीयता का वातावरण बना रहा। सभी ने एक-दूसरे को दीपावली की शुभकामनाएँ देते हुए आपसी सौहार्द, साहित्यिक एकजुटता और महिला सशक्तीकरण की भावना को और मजबूत बनाने का संकल्प लिया।अध्यक्ष डॉ कामना कौस्तुभ ने सभी को हमेशा ऐसे ही पारिवारिक माहौल में जुड़े रहने की अपील की। अलका पटेल द्वारा आभार ज्ञापन दिया गया।

उच्च शिक्षा के शिक्षकों की 30 मांगों को लेकर फुपुक्टा के आवाहन पर क्रमिक धरना जारी

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेशश विश्वविद्यालय महाविद्यालय शिक्षक महासंघ (फुपुक्टा) के आवाहन पर पुरानी पेंशन की बहाली, सेवानिवृत्ति की आयु 65 करने सहित 30 मांगों को लेकर उत्तर प्रदेश विश्वविद्यालय महाविद्यालय शिक्षक महासंघ (फुपुक्टा) के इको गार्डेन लखनऊ में चल रहे तीन दिवसीय क्रमिक धरने का आज दूसरा दिन है। आज कानपुर विश्वविद्यालय, आजमगढ़ विश्वविद्यालय, मेरठ विश्वविद्यालय, सहारनपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय के शिक्षकों ने धरना दिया। धरने की शुरूआत कल 17 नवम्बर को हुई थी जिसमें लखनऊ, फैजाबाद, बरेली, बुंदेलखंड, बलरामपुर विश्वविद्यालय से जुड़े कालेज के शिक्षकों ने धरने में सम्मिलित हुए थे और लुटा अध्यक्ष अनित्य गौरव ने पत्र भेज कर धरने का समर्थन किया गया था, इसके अलावा सेल्फ फाइनेंस टीचर्स एसोसिएशन उत्तर प्रदेश ने भारी तादात में शामिल हो कर समर्थन किया था। आज उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी शिक्षक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष डा0 अमित कुमार राय ने अपने संगठन की ओर से धरने का समर्थन किया और अपना समर्थन पत्र भी सौंपा। समाजवादी शिक्षक सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो0 बी0 पाण्डेय व समाजवादी शिक्षक महासभा के राष्ट्रीय महासचिव कुलदीप यादव ने भी धरने का समर्थन कर अपना समर्थन पत्र सौंपा। अनुदानित महाविद्यालय स्ववित्तपोषित शिक्षक संघ उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष डा0 अरुणेश त्रिपाठी भी धरने में सम्मिलित हुए और अपने संगठन की ओर से धरने का समर्थन किया। फुपुक्टा के इस चल रहे धरने से यह साबित हो गया है कि उत्तर प्रदेष की राजनीति में इस धरने से उथल-पुथल मच गई है और तमाम विपक्षी पार्टियों आगामी चुनाव में शिक्षकों की इन मांगो को अपने घोषणा-पत्र में शामिल करेंगी। कल धरने के आखिरी दिन फुपुक्टा की ओर से माननीय मुख्यमंत्री जी को शिक्षकों की 30 मांगों को लेकर ज्ञापन सौपा जाएगा। धरना स्थल पर हुई सभा को संगठन मंत्री डा0 टी0एस0 चौहान, उपाध्यक्ष डा0 प्रदीप शर्मा, उपाध्यक्ष हिमांषू सिंह, उपाध्यक्ष श्रीप्रकाश यादव, संयुक्त संचिव गंगेष दीक्षित, संयुक्त सचिव डा0 अमित कुमार राय, कार्यालय सचिव व मीडिया प्रभारी श्री मनीष हिन्दवी, संयुक्त मंत्री डी0सी0 कटियार, अनिल कुमार यादव कोषाध्यक्ष, रवि चौरसिया संयुक्त मंत्री, डा0 अर्चना दीक्षित उपाध्यक्ष महिला फुपुक्टा, प्रो0 सतीष चन्द्रा, पी0पी0एन0 कालेज कानपुर, समाजवादी षिक्षक सभा के राष्ट्रीय महासचिव कुलदीप यादव ने सम्बोधित किया। धरने में प्रो0 बी0डी0 पाण्डेय अध्यक्ष कूटा, डा0 लोकेश त्रिपाठी अध्यक्ष लुआक्टा, डा0 निरंकार राम त्रिपाठी महामंत्री गुआक्टा, डा0 धीरेन्द्र सिंह पूर्व महामंत्री गुआक्टा, डा0 जयविन्द्र तोमर अध्यक्ष सहारनपुर विष्वविद्यालय, सुभाष चन्द्र महामंत्री सहारनपुर विष्वविद्यालय, मेरठ से डा0 सचिन शर्मा, मूटा अध्यक्ष, विजय राठी अध्यक्ष मूटा, डा0 राहुल उज्जवल महामंत्री मूटा, आजमगढ़ से डा0 शषीकांत राव अध्यक्ष सुआक्टा, बलिया से डा0 भारतेन्दु मिश्रा लोकनायक चन्द्रषेखर विष्वविद्यालय, ए.एन.डी. कालेज कानपुर से डा0 अर्चना आनंद, अकबरपुर जिले से डा0 अभिनव सिंह, आजमगढ़ से प्रो0 राकेश यादव सहित धरने में भारी तादाद में शिषिक्षक व शिक्षिकाएं मौजूद थी। यह धरना कल तक चलेगा।

पति की हत्या की साजिश रचने के आरोप में प्रेमी सिपाही समेत 5 गिरफ्तार

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी में पति की हत्या की साजिश रचने के आरोप में पुलिस ने पत्नी और उसके प्रेमी सिपाही समेत पांच लोगों को गिरफ्तार किया है। आरोप है कि पत्नी आशी मिश्रा ने प्रेमी नितिन राणा के साथ मिलकर पति अनुराग शुक्ला की हत्या के लिए 6 लाख रुपए की सुपारी दी थी। मामला अलीगंज थाना क्षेत्र का है। 28 अक्टूबर की रात पुरनिया चौराहे के पास केंद्रीय भवन के गेट के नजदीक अनुराग पर गोली चलाई गई थी। गोली उनके दाहिने हाथ की बाजू में लगी थी। पुलिस ने जांच के बाद यूपी पुलिस के सिपाही नितिन राणा, मयंक वशिष्ठ, शुभम शर्मा और शिवम राजपूत को मेरठ से पकड़ा। वहीं, मुख्य साजिशकर्ता बताई जा रही पत्नी आशी मिश्रा को लखनऊ से पकड़ा गया। डीसीपी नार्थ अमित कुमार आनंद ने बताया कि नितिन राणा यूपी पुलिस में 2019 बैच का सिपाही है और मौजूदा समय में रिजर्व पुलिस लाइन लखनऊ में तैनात है। साल 2022 में कपूरथला स्थित मां पब्लिक लाइब्रेरी में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के दौरान उसकी मुलाकात आशी मिश्रा से हुई थी। इसके बाद दोनों के बीच प्रेम संबंध हो गए। साल 2025 में आशी की शादी अनुराग शुक्ला से हो गई, लेकिन शादी के बाद भी नितिन और आशी का संपर्क बना रहा।

लेखनी पलछिन पलछिन

(छप्पय)

भोर किरण नव पेज सृजन करती है प्रतिदिन।
खींच रही तस्वीर लेखनी पलछिन पलछिन।
सौरभ का विस्तार हवाएँ हँस कर कहती।
नई ज्योति के संग रोशनी जग में उतरी।
मन के गहरे भाव को मिलता जब आकर है।
अक्षर-अक्षर से तभी बसता नव संसार है।।

नव पल्लव पर झूम कह रहा पवन सुहावन।
भोर चुन रही ओस लगे जो पावन-पावन।
कलियों की मुस्कान सुवासित नन्दन-नन्दन।
भौरें गाकर गीत कर रहे सबका वन्दन।
कुशलक्षेम के साथ ही हर मन में उल्लास हो।
आपस के संबन्ध में सदा प्रेम विश्वास हो।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

रज्जू भय्या विवि और आथर्वण परिषद के मध्य समझौता

प्रयागराज। श्रीसिद्ध आथर्वण शोध परिषद, कौशाम्बी एवं प्रो. राजेन्द्र सिंह रज्जू भय्या विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग के मध्य शैक्षणिक, सांस्कृतिक ज्ञान विज्ञान के प्रचार प्रसार हेतु समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किया गया। कुलपति डॉ. अखिलेश कुमार सिंह के निर्देशानुसार संस्कृत विभागाध्यक्ष एवं डीन प्रो. आशुतोष



कुमार सिंह एवं परिषद के निदेशक डॉ. भास्कर मिश्र ने संयुक्त रुप से समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया।

वैदिक विज्ञान अनुप्रयोग के अंतर्गत मंत्र चिकित्सा का आधुनिक वैज्ञानिक सम्मत प्रयोग कर प्राचीन ज्ञान परंपरा का प्रायोगिक अन्वेषण करना पारस्परिक समझौते का मूल उद्देश्य है। भारतीय रसायन विज्ञान के नवीनतम अनुसंधानों का प्रकाशन कर भारतीय ज्ञान परम्परा को मजबूत करना है। समझौते के आधार पर पारस्परिक सहयोग से भावी कार्य योजना को विस्तार मिलेगा। इस अवसर पर संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ. प्रवीण कुमार द्विवेदी, डॉ. पीयूष मिश्र, डॉ. प्रिया झा, डॉ. मेघा जैन तथा परमानन्द की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

शहर समता विचार मंच, शिलोंग इकाई की काव्यगोष्ठी सम्पन्न

शिलांग। शहर समता विचार मंच शिलोंग इकाई, मेघालय की महिला काव्य गोष्ठी विजय लक्ष्मी सिंह की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस काव्यगोष्ठी की मुख्य अतिथि डॉ अनिता पंडा बंगलुरू से और अति विशिष्ट अतिथि मनीषा पॉल, असम से



जुड़ीं। यह काव्य गोष्ठी 16 नवंबर, 2026, सोमवार को शाम 7 बजे से गूगल मीट पर ऑनलाइन आयोजित की गई। काव्यगोष्ठी का शुभारंभ गीता लिम्बु द्वारा मधुर गणेश वंदना और सरस्वती वंदना से की गई और गोष्ठी का संचालन और संयोजन नीता शर्मा ने किया। इस काव्य गोष्ठी में डॉ अनिता पंडा, गीता लिंबू, नीता शर्मा, विजय लक्ष्मी सिंह, अन्नपूर्णा महराजा, मनीषा पॉल और मल्लिका दे विष्णु ने अपनी सुंदर रचनाओं की प्रस्तुति द्वारा आयोजन में चार चांद लगा दिये। मुख्यातिथि ने अपनी सार्थक और सटीक प्रतिक्रियाओं द्वारा सबको प्रोत्साहित कर काव्यपाठ किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही विजयलक्ष्मी सिंह ने भी सभी कलमकारों को प्रोत्साहित किया। अंत में नीता शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन देकर काव्यगोष्ठी का समापन किया।

जनगणना के आधार पर तय होती हैं विकास की योजनाये-केशव

लखनऊ, संवाददाता। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने प्रदेशवासियों से जनगणना की प्रक्रिया में बढ़-चढ़कर भाग लेने तथा जनगणना कार्य में लगे कर्मचारियों को सही, पूर्ण एवं विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराने की अपील की। जनगणना राष्ट्र के विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसके माध्यम से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर केंद्र एवं राज्य सरकारें जनकल्याणकारी योजनाओं का निर्माण करती हैं तथा देश, प्रदेश, गांव और समाज के समग्र विकास की कार्ययोजना तैयार करती हैं। देश में सामान्यतः प्रत्येक दस वर्ष में जनगणना की प्रक्रिया संपन्न होती रही है। कोरोना महामारी के कारण इस बार जनगणना निर्धारित समय पर नहीं हो सकी, जिसके चलते इसमें विलंब हुआ। वर्तमान में उत्तर प्रदेश में जनगणना की प्रक्रिया जारी है। ऐसे में प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वह इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्य में अपनी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करे। जब जनगणना से जुड़े कर्मचारी आपके घर पहुंचें तो उन्हें परिवार एवं अन्य निर्धारित विवरणों से संबंधित सही और विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराएं। जनगणना के दौरान दी गई जानकारी के आधार पर ही सरकार को विभिन्न क्षेत्रों की वास्तविक स्थिति, जनसंख्या संबंधी आवश्यकताओं और विकास की जरूरतों का आकलन करने में मदद मिलती है।

सम्पादकीय.....

एआई के संकल्प

ऐसे वक्त में जब दुनिया में तकनीकी वर्चस्व वैश्विक आर्थिक और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा के केंद्र में आ गया है, 'सैन 'फ्रांसिस्को घोषणा' के गहरे निहितार्थ और महत्व को समझना कठिन नहीं है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस घोषणा पर अमेरिका और भारत सहित नौ अन्य विकसित देशों ने हस्ताक्षर किए हैं। यह समझौता इस बात पर जोर देता है कि अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के बल पर ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की वैश्विक आपूर्ति शृंखला को सुरक्षित किया जा सकता है। वहीं दूसरी ओर घोषणा का एक अघोषित उद्देश्य इस उभरती हुई नई प्रौद्योगिकी में चीन के निरंतर बढ़ते दबदबे का मुकाबला करना भी है। चीन ने एक सुनियोजित ढंग से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में व्यापक और दीर्घकालीन निवेश किया है। इसमें दो राय नहीं कि उसकी उपलब्धियां अमेरिकी वर्चस्व को चुनौती देने वाली हैं। यही वजह है कि अमेरिका ने 'सैन फ्रांसिस्को घोषणा' को हकीकत बनाने को प्राथमिकता दी है। अमेरिका दुनिया में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की बढ़ती भूमिका के चलते इस दौर को 'सुपर इंटेलिजेंस युग' का नाम देता है। अमेरिका की 'पैक्स सिलिका' पहल एक बुनियादी सच्चाई को स्वीकार करती है कि दुनिया का कोई भी देश अकेले बूते पर बेहद जटिल प्रक्रिया वाले एआई इकोसिस्टम की हर कड़ी को सुरक्षित नहीं कर सकता है। उदाहरण के तौर पर देखें तो महत्वपूर्ण खनिजों और सेमीकंडक्टर निर्माण से लेकर ऊर्जा नेटवर्क और डिजिटल बुनियादी ढांचे तक, तकनीकी प्रगति आपस में जुड़ी वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं पर निर्भर करती है। इस शृंखला में किसी भी तरह का अवरोध किसी भी देश के आर्थिक ढांचे को गहरे तक प्रभावित कर सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो इन नेटवर्कों में यदि किसी भी तरह का व्यवधान पैदा होता है तो उसके दूरगामी आर्थिक और भू–राजनीतिक दुष्परिणाम सामने आ सकते हैं। जो किसी भी संप्रभु राष्ट्र के लिये, इस सुपर इंटेलिजेंस युग वाले दौर में तमाम चुनौतियां खड़ी कर सकता है। निश्चित रूप से 'सैन फ्रांसिस्को घोषणा' पर भारत का हस्ताक्षर करना एआई के दौर में हमारी उपलब्धियों की वैश्विक स्वीकार्यता का ही परिचायक है। भारत के लिए अमेरिका और अन्य विकसित देशों के साथ शामिल होना जहां एक ओर अच्छा रणनीतिक अवसर है, वहीं देश को जिम्मेदारियों का अहसास भी कराता है। भारत हालिया वर्षों में एक उभरते हुए टेक्नोलॉजी बाजार के रूप में सामने आया है। भारत की महत्वाकांक्षा वैश्विक सेमीकंडक्टर और मैन्युफैक्चरिंग हब बनने की रही है। हाल के वर्षों में भारत ने आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, ब्रिटेन और कई मध्यपूर्व के देशों के साथ मजबूत व्यापारिक साझेदारियां की हैं। जाहिर तौर पर ये विकसित व मजबूत आर्थिक देश जब कोई साझेदारी करते हैं तो उन्हें कुछ पाने की ही उम्मीद होती है। ऐसे में भारत इन मजबूत साझेदारियों, विभिन्न आपूर्ति शृंखलाओं, निवेश और उन्नत तकनीकों का बेहतर ढंग से लाभ उठा सकता है। इस बात में दो राय नहीं हो सकती है कि इन भरोसेमंद साझेदारों के साथ सहयोग करने से भारत पहले की तरह चंद देशों पर अत्यधिक निर्भरता कम कर सकता है। बदलते वैश्विक परिदृश्य में एक देश पर निर्भर रहना आर्थिक संप्रभुता के लिये चुनौती बन सकती है। ऐसे में नये भरोसेमंद साझेदारों के साथ देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती देने में मदद मिल सकती है। विडंबना यह भी है कि यह घोषणा ऐसे समय में सामने आई है, जब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्रांति की अगुवाई करने वाली शीर्ष कंपनियों में से एक–एनवीडिया विवादों में घिरी है और उसके शेयरों पर प्रतिकूल असर पड़ा है। विवाहेतर संबंधों व कथित चीनी जासूस से संबंधों को लेकर इसके संस्थापक जेनसेन हुआंग को एनवीडिया से बाहर जाना पड़ा है। इस अनिश्चितता के बीच, टेक कंपनियों द्वारा एनवीडिया की चिप्स और डेटा सेंटर इंफ्रास्ट्रक्चर में किए जा रहे भारी निवेश की निरंतरता को लेकर सवाल उठ रहे हैं। निस्संदेह, अमेरिका के नेतृत्व वाली इस पहल की सफलता टेक्नोलॉजी ट्रांसफर, निवेश और मजबूत घरेलू क्षमताओं पर निर्भर करेगी। अंततरू एआई आपूर्ति शृंखला को सुरक्षित करने का मतलब सिर्फ तकनीक पर नियंत्रण रखना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना है एआई के फायदे भरोसेमंद हों, सभी की पहुंच में हों और इसे व्यापक रूप से साझा किया जा सके।

ग़ज़ल

पुण्य कर्मों से प्रणय का यह अमर अवसर मिला,
मीत! मन से मन मिला, तू और स्वर से स्वर मिला।

हर कोई अपने हुनर में खूब था, नायाब था,
बस वही आगे बढ़ा, जिसको उचित अवसर मिला।

छंद का जब प्रेम से अनुबंध शब्दों में ढला,
भाव के भवभूति को अनुभूति–रत्नाकर मिला।

देवता था, भीलनी के बेर जूठे खा गया,
आदमी का आचरण हे राम! आडंबर मिला।

सभ्यता के दौर की रफ़्तार का मत पूछिए,
कभी चक्का–जाम तो सिग्नल, कभी ब्रेकर मिला।

आज फिर दहलीज़ तक आकर कोई वापस गया,
आज फिर शायद उसे मैं इस क़दर बेघर मिला।



– डॉ० अवनीश यादव,
पी.ई.एस.
उत्तर प्रदेश

ईरान के खिलाफ युद्ध के अगले चरण की तैयारी?

असद मिर्जा

केंद्र को अब पारदर्शी चुनावी फंडिंग प्रणाली पर काम करना चाहिएसर्वोच्च न्यायालय को बधाई चुनावी बांड रद्द करने के आदेश से लोकतंत्र मजबूत हुआ

यॉर्क में इजरायली और अमेरिकी बयान तैयारी और प्रतिरोध पर जोर देते नजर आ रहे हैं, मगर ईरान पर हमले के किसी घोषित फैसले का संकेत नहीं देते। कुल मिलाकर यह सैन्य तैयारी, कूटनीतिक दबाव और क्षेत्रीय जोखिमों का अस्थिर मेल है, जिसका असर ऊर्जा सुरक्षा, जहाजरानी और भारत के रणनीतिक संतुलन तक पहुंचता है। ईरान के साथ संभावित नई जंग के लिए इजरायली–अमेरिकी तैयारियां तेज हो रही हैं। रिपोर्टों के मुताबिक बेंजामिन नेतन्याहू ने हाल के दिनों में रोजाना डोनाल्ड ट्रंप को फोन कर नए हमलों पर जोर दिया, जबकि वाशिंगटन कूटनीति और दबाव के बीच संतुलन तौल रहा है। न्यूयॉर्क में इजरायल हयोम समिट में दिए गए बयान तैयारी को रेखांकित करते हैं, मगर किसी तात्कालिक हमले की पुष्टि नहीं करते। इजरायल हयोम समिट्य एक अखबार द्वारा आयोजित सम्मेलन है, कोई सरकारी या सैन्य योजना मंच नहीं। इसका न्यूयॉर्क में दूसरा संस्करण 11 नवंबर को मैनहट्टन में हुआ, जिसमें इजरायली और अमेरिकी राजनीतिक व सुरक्षा हस्तियों ने द्विपक्षीय संबंधों और कूटनीति पर चर्चा की। इजरायली रक्षा कंपनी आईएआई के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सीईओ बोआज लेवी ने इजरायली समाचार–पत्र हयोम को इंटरव्यू दियाय लेकिन उनकी बातें उनका निजी आकलन हैं, युद्ध का आधिकारिक इजरायली फैसला नहीं। टाइम्स ऑफ इजरायल और एक्सियोस ने इजरायली व अमेरिकी सूत्रों के हवाले से अलग–अलग बताया कि नेतन्याहू ने हालिया कॉल में ट्रंप से जल्द ईरान पर हमला करने को कहा। उधर लेवी ने 11 नवंबर की समिट में कहा कि इजरायल को ईरान के साथ एक और युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए, और सवाल श्अगरश्य का नहीं बल्कि कब का है। लेवी ने ईरानी मिसाइल बौछारों के खिलाफ एरो मिसाइल रक्षा प्रणाली के प्रदर्शन का जिक्र किया, 92 प्रतिशत इंटरसेप्शन दर का दावा किया, और कहा कि इजरायल और अमेरिका इंटरसेप्टरों का उत्पादन बढ़ा रहे हैं और अधिक ऊंचाई पर रोकने की क्षमता चाहते हैं। उन्होंने एक इजरायली उपग्रह का भी जिक्र किया जो लड़ाकू पायलट को वास्तविक समय में दिशा देता है। ये बयान अहम हैं, मगर रक्षा उद्योग के प्रमुख के हैं, सरकारी घोषणा नहीं। उसी समिट में अमेरिकी बयान अधिक राजनीतिक थे। इजरायली समाचार–पत्र हयोम के अनुसार संयुक्त राष्ट्र में अमेरिकी राजदूत माइक वाल्ट्ज ने ईरानी शासन को पहले से अधिक कमजोर बताया और कहा कि अब्राहम समझौते फैल रहे हैं। सितंबर में अल–मॉनिटर को एक अलग इंटरव्यू में उन्होंने कहा था कि ईरान के लिए वार्ता में लौटने का दरवाजा खुला है और समय वाशिंगटन के पक्ष में है। यानी दबाव और कूटनीति साथ–साथ चल रही रणनीतियां दिखती हैंय यह एक और हमले की सार्वजनिक अमेरिकी प्रतिबद्धता नहीं है। सैन्य तैयारियों की खबरों के बीच यह अंतर बेहद अहम है। एनपीआर ने अक्टूबर में अमेरिकी–इजरायली युद्ध योजना से वाकिफ एक व्यक्ति के हवाले से बताया कि दोनों देश अमेरिकी मध्यावधि चुनावों के बाद संभावित हमले की तैयारी कर रहे हैं। रिपोर्ट में यह भी कहा गया था कि सैन्य जमावड़े का मकसद तेहरान पर समझौते के लिए दबाव डालना भी हो सकता है। यह दावा एक अनाम सूत्र से जुड़ा था, आधिकारिक नीति के रूप में घोषित नहीं। लेवी के बयान दीर्घकालिक तैयारी की धारणा को मजबूत करते हैं, मगर किसी आसन्न कार्रवाई की स्वतंत्र पुष्टि नहीं करते और न उसके उद्देश्य बताते हैं। क्षेत्रीय सुरक्षारू प्रतिरोधा, तनाव और गलत आकलन पहला क्षेत्रीय निहितार्थ यह है कि मिसाइल रक्षा को स्थायी जरूरत माना जा रहा हैय लेवी के ब्योरे से झलकता है कि इजरायल की नजर में ईरान की बैलिस्टिक मिसाइल क्षमता भविष्य की सुरक्षा योजना में केंद्रीय रहेगी। बेहतर इंटरसेप्शन हमले के अपेक्षित नुकसान को घटाकर प्रतिरोध को मजबूत कर सकता है। लेकिन यह सुरक्षा की गारंटी नहीं हैरू ऊंची इंटरसेप्शन दर के बावजूद मिसाइलें गिर सकती हैं, और लंबे या बार–बार के हमलों में इंटरसेप्टरों की लागत और उपलब्धता बाधा बन सकती है। 92 प्रतिशत का आंकड़ा हयोम के अनुसार लेवी का दावा है, स्वतंत्र रूप से सत्यापित आंकड़ा नहीं। व्यापक खतरा सुरक्षा दुविधा का है। इजरायल जिन तैयारियों को रक्षात्मक कहता है, यानी ज्यादा इंटरसेप्टर, बेहतर सेंसर और अंतरिक्ष आधारित तालमेल, तेहरान उन्हें नए आक्रामक कदम की नींव मान सकता है। तब ईरान अपनी सैन्य तैयारियों या क्षेत्रीय जहाजरानी और बुनियादी ढांचे पर दबाव से प्रतिरोध बहाल करने की कोशिश कर सकता है। नतीजा ऐसा चक्र हो सकता है जिसमें हर पक्ष कहे कि वह अगला हमला रोक रहा है, जबकि दूसरे में पहले निशाना बनने का डर बढ़ता जाए। वाल्ट्ज का यह कहना कि ईरान कमजोर है, भी जोखिम बन सकता है, अगर इसे दबाव की कामयाबी और उसे और बढ़ाने का सबूत मान लिया जाए। दूसरी ओर वार्ता की तत्परता कूटनीति की गुंजाइश छोड़ती है। विकल्प सिर्फ श्हमला या वार्ताय नहीं हैरू सैन्य तैयारी वार्ता को सहारा दे सकती है, लेकिन अगर नेता युद्ध को सार्वजनिक रूप से अपरिहार्य बताएं तो समझौते की गुंजाइश घट भी सकती है।

संविधान, हमारे कर्तव्य और आत्मनिरीक्षण की पुकार: एक आम नागरिक की यात्रा

किसी भी विषय पर कलम उठाने से पहले मेरा यह अटूट विश्वास रहा है कि जब तक उस विषय की गहराई को न टटोला जाए, तब तक उसके साथ पूरा न्याय नहीं किया जा सकता। किसी भी आलेख या संपादकीय को लिखने से पहले उसका गहन अध्ययन करना, उसके हर एक पहलू को खुद जीना और फिर उसे शब्दों में ढालना ही एक सच्चे लेखक का धर्म है। सच बताऊँ तो, संविधान दिवस के इस पावन अवसर पर जब मैंने इस महान दस्तावेज का गहन अध्ययन करना शुरू किया, तो मुझे यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं है कि बहुत सी ऐसी बातें थीं जिन्हें मैं खुद बहुत अच्छे से नहीं जानती थी। हममें से अधिकांश लोगों की तरह, मेरे लिए भी संविधान एक ऐसी ही पुस्तक थी जिसे स्कूलों की किताबों में या कभी–कभार अदालतों और समाचारों में सुना भर था।

ध्लेकिन जैसे–जैसे मैंने अपनी इस अज्ञानता को तोड़ने के लिए इस विशाल और पवित्र ग्रंथ के पन्नों को पलटा, इसके निर्माण के इतिहास, इसकी हर एक धारा और इसके मर्म को गहराई से समझा, तो मुझे अहसास हुआ कि यह कोई साधारण किताब नहीं हैकृयह हम भारतवासियों की सामूहिक चेतना का जीवंत दस्तावेज है। मेरे मन में उपजी इस जानने की तीव्र चाह और फिर समाज तक इस ज्ञान को पहुँचाने की प्रबल प्रेरणा ने ही मुझे आज इस विषय पर लिखने के लिए निमित्त बनाया है, ताकि मैं केवल खुद न सीखूँ, बल्कि आप सबको भी इस आत्मबोध से जोड़ सकूँ।

संविधान केवल कानूनी धाराओं या वकीलों का दस्तावेज नहीं है; यह हम सबका सबसे पवित्र ग्रंथ, राष्ट्र का जीवन–दर्शन और हमारा साझा दर्पण है। जिस तरह कोई धार्मिक ग्रंथ हमें जीवन जीने की सही राह सिखाता है, ठीक उसी तरह यह एक लोकतांत्रिक देश का वह सर्वोच्च नैतिक ग्रंथ है जो हमें अधिकारों के साथ–साथ कर्तव्यों का पाठ पढ़ाता है। बिना कर्तव्यों के अधिकारों की माँग केवल स्वार्थ है, और इस पवित्र ग्रंथ को पढ़कर इसके अनुरूप आचरण करना ही संविधान के प्रति हमारी असली पूजा है।ष

अपने इसी गहन अध्ययन और आत्ममंथन से प्राप्त सीखों को मैंने कुछ बिंदुओं के साथ पिरोया है, ताकि हम सब मिलकर यह समझ सकें कि इस पवित्र ग्रंथ को पढ़ना और समझना हमारे लिए कितना आवश्यक है।

1. संविधान दिवस और हमारी अपनी अनभिज्ञता

हम हर साल 26 नवंबर को श्संविधान दिवसश मनाते हैंकृ वह दिन जब 1949 में हमने अपने संविधान को अंगीकृत किया था। लेकिन क्या कभी हमने रुककर सोचा है कि हम इसके बारे में कितना जानते हैं? रोज़मर्रा की भागदौड़ में हम संविधान को भूल जाते हैं और सिर्फ तब याद करते हैं जब हमारे अपने अधिकारों का हनन होता है। जब मैंने इसके निर्माण की कठिन यात्रा (जिसे पूरा होने में 2 वर्ष, 11 महीने और 18 दिन लगे) का अध्ययन किया, तो मुझे लगा कि जिस संविधान ने हमें एक आज़ाद और लोकतांत्रिक देश में जीने का हक दिया, उसके प्रति हमारी यह अज्ञानता कितनी बड़ी विडंबना है।

2. अधिकारों की ज़िद और कर्तव्यों से हमारा भारी पक्षपात

अध्ययन के दौरान जिस एक बात ने मुझे सबसे ज्यादा झकझोरा, वह था हमारे अधिकारों और कर्तव्यों का असंतुलन।

हम बड़ी मुखरता से सरकार, व्यवस्था और समाज से अपने अधिकारों की माँग करते हैंकृ और यह हमारा हक भी है।

लेकिन, क्या कभी हमने यह सोचा है कि राष्ट्र के प्रति हमारे अपने कर्तव्य क्या हैं? क्या हम अपने कर्तव्यों के प्रति ईमानदार हैं?

सच तो यह है कि हम राष्ट्र–प्रेम की बड़ी–बड़ी बातें करते हैं, लेकिन अपने दैनिक जीवन में संविधान द्वारा सौंपे गए कर्तव्यों के साथ सबसे बड़ा पक्षपात करते हैं।

3. क्या हम वही कर रहे हैं जो हमें करना चाहिए? (एक खुला सवाल)

अपने अध्ययन के बाद जब मैंने अपने आस–पास की दुनिया को देखा, तो यह सवाल बार–बार मेरे मन में उठा कि क्या हमें वाक़ई वही करना चाहिए जो हम आज कर रहे हैं?

जब हम सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुँचाते हैं, कचरा यहाँ–वहाँ फेंककर अपने पर्यावरण को मैला करते हैं, कानून को अपने हाथ में लेते हैं, या समाज में भेदभाव और नफ़रत को बढ़ावा देते हैंकृतो क्या यह संविधान सम्मत आचरण है?

संविधान का अनुच्छेद 51क हमें स्पष्ट रूप से हमारे मौलिक कर्तव्यों की याद दिलाता है। लेकिन हम अपने स्वार्थों के आगे इन कर्तव्यों को ताक पर रख देते हैं। यह पक्षपात देश के साथ सबसे बड़ा धोखा है। सच्ची देशभक्ति सिर्फ सरहदों पर नारे लगाना नहीं है, बल्कि हर ट्रैफिक सिग्नल पर रुकना, हर नागरिक का सम्मान करना और देश के नियमों का पालन करना है।

4. दैनिक जीवन के कुछ आईनेरू कहाँ चूक रहे हैं हम?

जब मैंने इस विषय को गहराई से परखा, तो मुझे अपने आस–पास ऐसे कई छोटे–छोटे उदाहरण दिखाई दिए जो यह बताते हैं कि संविधान के प्रति हमारा आचरण कैसा होना चाहिए और हम वास्तव में क्या कर रहे हैंरू

उदाहरण के लिएरू हम में से कितने ही लोग ट्रैफिक रेड लाइट पर तब तक नहीं रुकते जब तक सामने पुलिसवाला न खड़ा हो। क्या यह सोचना हमारा कर्तव्य नहीं है कि वह नियम हमारी ही सुरक्षा के लिए है?

दूसरा उदाहरणरू हम अपने घर को तो चकाचक साफ रखते हैं, लेकिन कचरा अपनी ही गली या सड़क पर फेंक देते हैं। क्या संविधान का अनुच्छेद 51क(छ) हमें पर्यावरण और सार्वजनिक स्थलों की रक्षा का पाठ नहीं पढ़ाता?

जब हम अधिकारों के प्रति सजग होकर कर्तव्यों के प्रति आँखें मूँद लेते हैं, तो यही वह पक्षपात है जो हमारे राष्ट्र–विकास की गति को धीमा करता है।

5. प्रस्तावना और समानता का मर्म

जब मैंने संविधान की प्रस्तावना (च्तमंउइसम) का गहराई से अध्ययन किया, तो मुझे समझ आया कि न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के जो सिद्धांत इसमें लिखे हैं, वे सिर्फ शब्द नहीं हैं। वे एक बेहतर समाज की रीढ़ हैं। जब तक हम समाज के सबसे कमज़ोर व्यक्ति को बराबरी का अधिकार और सम्मान नहीं देंगे, तब तक हमारा राष्ट्र–प्रेम अधूरा है।

6. स्वभाषा, संस्कृति और राष्ट्रीय अस्मिता का संरक्षण

जब हम राष्ट्रीय चेतना की बात करते हैं, तो यह केवल भौतिक विकास तक सीमित नहीं रह सकती। राष्ट्र की वास्तविक अस्मिता उसकी स्वभाषा, उसकी संस्कृति और उसके गौरवशाली इतिहास में बसती है। यदि हम अपनी मातृभाषा और अपनी सांस्कृतिक जड़ों को छोड़कर विदेशी तौर–तरीकों में ही अपनी आधुनिकता तलाशेंगे, तो राष्ट्र की आत्मा कमजोर होगी। संविधान हमें अपनी विविधता का सम्मान करने के साथ–साथ अपनी साझा संस्कृति की रक्षा (अनुच्छेद 51क–स) का भी पाठ पढ़ाता है। अपनी भाषा में सोचना, अपनी संस्कृति पर गर्व करना और देश की धरोहरों को सहेजना ही सच्ची राष्ट्रीय चेतना है।

संविधान की किताब सिर्फ मेज पर रखने या दराज में सजाने के लिए नहीं है; यह हमारे आचरण की मार्गदर्शिका है। जब तक इसका एक–एक नियम हमारे संस्कारों में नहीं उतरता, तब तक संविधान अधूरा है।ष

अज्ञानता से जागरूकता की ओर एक कदम

यह जरूरी नहीं है कि हर लेखक या हर ज्ञाता को हर विषय की छोटी–छोटी बारीकियां पहले से ही पता हों। लेकिन जब हम किसी विषय को जानने की इच्छा रखते हैं, तो आज के इस डिजिटल युग में ई–बुक्स और आधुनिक माध्यमों से अध्ययन करना और उसकी गहराई तक पहु पहुँचना बिल्कुल भी असंभव नहीं है।

जैसा कि मेरा हमेशा से यह मानना रहा है कि सिर्फ किसी बात को जान लेना ही काफी नहीं है; बल्कि जानना, उस पर गहन चिंतन करना और उस चिंतन के माध्यम से अपने विचारों को समृद्ध करना एक लेखक व विचारक के लिए अत्यंत आवश्यक है।

ध्इस संविधान दिवस पर आइए हम केवल औपचारिकताएँ पूरी न करें। मेरी अपनी इस सीखने और अध्ययन की यात्रा से उपजे बोध के साथ मैं आप सभी से यह अपील करना चाहती हूँकृ आइए, केवल अधिकार माँगने वाले नागरिक न बनें, बल्कि इस राष्ट्र के पवित्र ग्रंथ श्संविधानश को पढ़ना और समझना अपना कर्तव्य समझें। राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रीय चेतना की अनंत शक्ति हमारे इन्हीं संस्कारों में निहित है; अपनी स्वभाषा और संस्कृति का सम्मान करते हुए संविधान के अनुरूप आचरण करना ही भारत माता के प्रति हमारी सबसे सच्ची भक्ति है।

डॉ. संगीता बनाफ़र
प्रदेश अध्यक्ष, विश्व हिंदी परिषद
छत्तीसगढ़, भारत

'संविधान'

ये पन्ने महज कागज़ के टुकड़े नहीं,
ये एक सोते हुए देश की जागी हुई नींद हैं!
ये उस उम्मीद का नक्शा हैं,
जिसे सदियों के अंधकार के बाद,
कुछ आज़ाद आँखों ने मिलकर बुना था।
यह प्रस्तावना,
एक मन्त्र है इस बहुरंगी ज़मीन का,
जहाँ हर धर्म, हर भाषा, हर बोली,
एक ही तिरंगे के छांव में सांस लेती है।
यहाँ 'हम' का मतलब सिर्फ एक नहीं,
अनेकों का एक होना है–
एकता के धागे में बंधा हुआ।
जब कोई सवाल पूछता है आज़ादी पर,
तो ये आर्टिकल (अनुच्छेद) ढाल बन जाते हैं।
समानता का अधिकार,
हर उस शख्स के कंधे पर हाथ रखता है,
जिसे सदियों तक हाशिए पर धकेला गया था।
और अभिव्यक्ति की आज़ादी?
वह हवा है, जो तानाशाही के बंद कमरों में भी,
अपनी महक छोड़ जाती है।
ध्लेकिन सुनो...
संविधान कोई मुकम्मल मूर्ति नहीं,
जिसे मंदिर में रख कर पूजा जाए।
यह एक जीवंत दस्तावेज है,
जो रोज़ हमारी कसौटियों पर परखा जाता है।
हर बार जब कोई कमज़ोर न्याय मांगता है,
यह और मज़बूत होता है।
हर बार जब कोई नफरत की दीवार गिराता है,
इसकी इबारत और गहरी होती है।
ध्यह हमारा कल भी है,
और आज की बेचैनी का जवाब भी।
यह याद दिलाता है हमेंकृ
कि ताकतवर की लाठी से बड़ी,
इस देश की न्याय की तराजू है।
ध्तो आओ,
इसे सिर्फ किताबों में बंद न रखें,
इसे अपने आचरण में उतारें।
क्योंकि जब तक संविधान ज़िंदा है,
हर नागरिक की उम्मीद,
और इस लोकतंत्र की सांसें,
ज़िंदा हैं!

प्रदूषणों के बीच पर्व

डॉ. दीपक पाचपोर

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म श्एक्सश पर छठ पर्व पर लोगों को शुभकामनाएं दीं और इस दिव्य उत्सव को प्रकृति को समर्पित दृढ़ संकल्प और आध्यात्मिक साधना का अद्भुत संगम बताया। इस बार बिहार में वोट हासिल करने के लिए भावनाओं को भुनाने की जरूरत नहीं है, तो छठ पर लिखित बधाई देकर ही नरेन्द्र मोदी ने काम चला लिया। वर्ना पिछले साल उन्हें घाट पर अर्घ्य देने का वीडियो बनवाना पड़ा था। हालांकि प्रधानमंत्री के लिए साफ पानी से युक्त घाट बनाया गया था, आम जनता जिस मैले और जहरीले पानी में खड़े होकर पूजा करने और अर्घ्य देने पर मजबूर होती है, उस अभिशाप से प्रधानमंत्री की कुर्सी उन्हें बचा लेती है। वैसे इस बार दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की भी अर्घ्य देते तस्वीरें आई हैं। छठ जैसे अनूठे और अद्भुत लोकपर्व को बड़ी तेजी से राजनीतिक हथकंडों का जरिया बनाया जा रहा है, यह खतरनाक है। यह एक बड़ी चिंता का विषय है, जिस पर श्रद्धालुओं को ही विचार करना होगा। लेकिन इसके साथ ही एक अन्य बड़ी चिंता और है। पिछले कई सालों की तरह इस बार भी छठव्रतियों को गंदे पानी में खड़े होकर अर्घ्य देना पड़ा। छठ में साफ–सफाई का बड़ा महत्व है। घाटों की सफाई से लेकर घर में बनने वाले प्रसाद तक हर चीज में शुद्धता का खास ख्याल रखा जाता है। लेकिन अब ऐसा नहीं रहा। अपने घरों पर तो लोग सफाई का ख्याल रख लेते हैं, लेकिन सार्वजनिक घाटों और नदियों को साफ बनाए रखने की जिम्मेदारी सरकार और प्रशासन की है, जिसे निभाने में वे नाकाम रहे हैं।

सुप्रिया पिलगांवकर और सिद्धार्थ बोडके की 'तू आहेस ना' का फर्स्ट लुक जारी, आईएफएफआई में होगा वर्ल्ड प्रीमियर



लव फिल्म्स ने अपनी दूसरी मराठी फिल्म 'तू आहेस ना' की घोषणा कर दी है। फिल्म में सुप्रिया पिलगांवकर और सिद्धार्थ बोडके मुख्य भूमिकाओं में नजर आएंगे। मेकर्स ने फिल्म का फर्स्ट लुक पोस्टर जारी करते हुए इसकी पहली झलक दर्शकों के साथ साझा की है। यह फिल्म मानवीय रिश्तों और भावनात्मक जुड़ाव की एक खूबसूरत कहानी पेश करेगी, जिसमें दिखाया जाएगा कि किस तरह दो अनजान लोगों के बीच बना एक अनपेक्षित रिश्ता उनकी जिंदगी को नई दिशा दे सकता है। फिल्म की कहानी के केंद्र में सुप्रिया पिलगांवकर हैं, जिन्होंने टेलीविजन, हिंदी और मराठी फिल्मों के साथ–साथ थिएटर में भी अपने अभिनय से खास पहचान बनाई है। कई दशकों के अपने शानदार करियर में उन्होंने अलग–अलग तरह के किरदार निभाए हैं। 'तू आहेस ना' की भावनात्मक और प्रासंगिक कहानी ने उन्हें इस प्रोजेक्ट से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। वहीं, सिद्धार्थ बोडके भी इस फिल्म के जरिए एक बार फिर लव फिल्म्स के साथ काम कर रहे हैं। इससे पहले वह 'देवमानुस' के बाद प्रोडक्शन हाउस के साथ जुड़ चुके हैं। तू आहेस ना' के लिए एक बड़ी उपलब्धि यह भी है कि फिल्म का वर्ल्ड प्रीमियर 26 नवंबर को गोवा में आयोजित होने वाले 57वें इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया (आईएफएफआई) में किया जाएगा। फिल्म को फेस्टिवल के प्रतिष्ठित 'गाला प्रीमियर' सेक्शन में जगह मिली है। खास बात यह है कि इस श्रेणी में प्रीमियर होने वाली यह इकलौती मराठी फिल्म होगी। फिल्म का लेखन और निर्देशन दीपक गावड़े ने किया है। मराठी सिनेमा में अपने काम के लिए पहचान बना चुके दीपक गावड़े राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और महाराष्ट्र राज्य फिल्म पुरस्कारों से भी जुड़े रहे हैं। इस फिल्म के जरिए वह एक बार फिर निर्देशन की दुनिया में वापसी कर रहे हैं। फिल्म को लेकर सुप्रिया पिलगांवकर ने कहा, "तू आहेस ना की कहानी और मौजूदा समय में इसकी प्रासंगिकता ने एक कलाकार के तौर पर मुझे काफी प्रभावित किया। फिल्म में जिस विषय को उठाया गया है और जिस तरह का किरदार मुझे निभाने का अवसर मिला, उसने मुझे इस प्रोजेक्ट का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित किया। मैं आईएफएफआई में दर्शकों के सामने इस फिल्म को पेश किए जाने का बेसब्री से इंतजार कर रही हूं। वहीं, सिद्धार्थ बोडके ने अपने अनुभव के बारे में बताया, "श्तू आहेस नाश में मुझे एक ऐसा किरदार निभाने का मौका मिला, जिसमें

> फिल्म की कहानी के केंद्र में सुप्रिया पिलगांवकर हैं, जिन्होंने टेलीविजन, हिंदी और मराठी फिल्मों के साथ-साथ थिएटर में भी अपने अभिनय से खास पहचान बनाई है। कई दशकों के अपने शानदार करियर में उन्होंने अलग-अलग तरह के किरदार निभाए हैं।

भावनाओं के कई रंग देखने को मिलेंगे। एक अभिनेता के तौर पर मैं लंबे समय से इस तरह की भूमिका निभाना चाहता था। देवमानुस के बाद लव फिल्म्स के साथ यह मेरा दूसरा प्रोजेक्ट है। इस टीम के साथ दोबारा काम करना और ऐसी कहानी का हिस्सा बनना मेरे लिए काफी खास रहा। इस किरदार ने मुझे एक कलाकार के रूप में चुनौती दी और अपने अभिनय के नए पहलुओं को तलाशने का मौका दिया।"निर्देशक दीपक गावड़े ने कहा, "मराठी सिनेमा में निर्देशक के तौर पर वापसी करना मेरे लिए बेहद खास और संतोषजनक अनुभव है। श्तू आहेस ना जैसी कहानी से जुड़ना मेरे दिल के बेहद करीब है। मुझे खुशी है कि फिल्म का वर्ल्ड प्रीमियर प्रतिष्ठित आईएफएफआई में होने जा रहा है। मैं उत्सुकता से इंतजार कर रहा हूं कि दर्शक इस कहानी को बड़े पर्दे पर देखें और इससे जुड़ाव महसूस करें।"लव फिल्म्स द्वारा प्रस्तुत 'तू आहेस ना' का निर्देशन और लेखन दीपक गावड़े ने किया है। फिल्म को लव रंजन और अंकुर गर्ग ने प्रोड्यूस किया है। यह फिल्म 2027 में सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।



बात करने की तमीज नहीं, बेहद आपत्तिजनक इंसान... नवाजुद्दीन सिद्दीकी को टैग कर दीया मिर्जा ने की क्रिप्टिक पोस्ट

अपनी सौम्य छवि और शांत स्वभाव के लिए जानी जाने वाली बॉलीवुड अभिनेत्री दीया मिर्जा ने अपनी हालिया इंस्टाग्राम पोस्ट से फिल्म इंडस्ट्री और सोशल मीडिया पर हलचल मचा दी है। दीया ने अपनी पोस्ट में किसी शख्स के बेहद खराब व्यवहार और रवैये को लेकर तीखी नाराजगी जाहिर की है। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि एक्ट्रेस ने इस पोस्ट में दिग्गज अभिनेता नवाजुद्दीन सिद्दीकी को टैग किया है, जिसके बाद से फैंस और बॉलीवुड गलियारों में अटकलों का बाजार गर्म हो गया है। हालांकि, यह साफ नहीं है कि यह टिप्पणी नवाजुद्दीन के लिए थी, या फिर किसी प्रोजेक्ट के दौरान किसी तीसरे व्यक्ति की वजह से दोनों कलाकारों का अनुभव खराब रहा। इस पोस्ट ने अपने समय (टाइमिंग) की वजह से सबका ध्यान खींचा है। दीया की पोस्ट के कुछ ही समय बाद, नवाजुद्दीन ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक खाली कुर्सी की तस्वीर शेयर की। उन्होंने इसके कैप्शन में लिखा, ष्एक ओंकार! नानक देव जीष्। इस टाइमिंग ने लोगों के बीच उत्सुकता बढ़ा दी है, लेकिन दोनों में से किसी ने भी यह नहीं बताया है कि क्या इन दोनों पोस्ट का आपस में कोई संबंध है। दीया ने अपनी पोस्ट में लिखा, ष्इनके साथ काम करना किसी बुरे सपने जैसा है! न तो बात करने की तमीज है, और एटीट्यूड तो एकदम अलग ही लेवल का है! बेहद आपत्तिजनक इंसान।ष उन्होंने इसमें नवाजुद्दीन सिद्दीकी के इंस्टाग्राम अकाउंट को भी टैग किया। इस पोस्ट के शब्दों को लेकर सवाल उठ रहे हैं कि आखिर दीया किसके बारे में बात कर रही हैं। चूंकि पोस्ट में नवाजुद्दीन को टैग किया गया है, इसलिए कुछ लोग इसे उन पर की गई टिप्पणी मान सकते हैं। हालांकि, दीया ने कैप्शन में कहीं भी उनका नाम नहीं लिया है और न ही अपनी बातों के पीछे का संदर्भ स्पष्ट किया है। यह भी मुमकिन है कि यह टिप्पणी किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में हो, जिससे वे किसी प्रोजेक्ट पर काम करते समय मिले हों। नवाजुद्दीन की इंस्टाग्राम स्टोरी ने इस मामले में उत्सुकता और बढ़ा दी है। उन्होंने एक खाली कुर्सी की तस्वीर शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा, ष्एक ओंकार! नानक देव जीष्। हालांकि, उन्होंने दीया का कोई जिक्र नहीं किया और न ही उनकी पोस्ट की ओर कोई इशारा किया।

90 साल पुरानी पेंटिंग से सोनम कपूर ने चुराया फैशन आईडिया, 1936 से जुड़ा है साड़ी का कनेक्शन



अभिनेत्री सोनम कपूर ने मुंबई में आयोजित अर्थशॉट प्राइज 2026 के ग्रीन कार्पेट पर भारतीय कला इतिहास की एक झलक पेश की। अभिनेत्री ने मशहूर चित्रकार अमृता शेरगिल की 1936 की एक पेंटिंग से प्रेरित, अनामिका खन्ना द्वारा विशेष रूप से तैयार की गई पोशाक पहनी। उनकी बहन रिया कपूर द्वारा स्टाइल किए गए इस लुक में, सोनम ने अमृता शेरगिल द्वारा 1936 में बनाए गए अपने चचेरे भाई सुमेर अपजीत सिंह के चित्र से प्रेरणा ली थी। सोनम गहरे हरे रंग की साड़ी और लंबे झुमके पहने नजर आईं। यह लुक अमृता शेरगिल के उस लगाव को दर्शाता है, जो यूरोप में कई साल बिताने के बाद भारतीय रंगों और विषयों के प्रति उनमें पैदा हो गया था। इस पोशाक के महत्व के बारे में बताते हुए रिया ने लिखा,/सोनम कपूर की अनामिका खन्ना द्वारा डिजाइन की गई पोशाक, अमृता शेरगिल की 1936 की उस पेंटिंग से प्रेरित है, जिसमें उन्होंने अपने चचेरे भाई सुमेर अपजीत सिंह को चित्रित किया था। अमृता शेरगिल खुद आधी भारतीय और आधी हंगेरियन थीं। उन्होंने पेरिस में प्रशिक्षण लिया था, और बाद में भारत को अपना घर और अपनी कला की प्रेरणा (म्यूज) बनाया। सुमेर भी इन्हीं दो दुनियाओं के बीच रहे थे। उनका पालन–पोषण पटियाला में हुआ था, जहाँ उन्हें पश्चिमी शैली से भी लगाव था। बाद में उन्होंने पेरिस में एल्सा शियापारेली के लिए मॉडलिंग भी की। फिर भी, उनकी चचेरी बहन (अमृता शेरगिल) ने उन्हें गहरे हरे रंग की साड़ी में चित्रित किया, जिसमें वे सफेद फूलों का एक गुच्छा पकड़े हुए हैं। अनामिका खन्ना ने इसी कहानी को आगे बढ़ाया है। शुद्ध शिफॉन की इस साड़ी पर हरे रंग के शेड्स हाथ से पेंट किए गए हैं। इसके ऊपर सिल्क वेलवेट का एक कोट है, जिसका डिजाइन पश्चिमी शैली का है और किनारों पर जरदोजी का काम किया गया है। लगभग नब्बे साल बाद, वे दो दुनियाएँ, जिनके बीच सुमेर का जीवन बीता था, सोनम के रूप में फिर से एक साथ आ गई हैं। सोनम श्अर्थशॉट प्राइजश समारोह में शामिल हुईं, जिसमें प्रिंस विलियम और प्रिंसेस केट मिडलटन भी मौजूद थे। 17 नवंबर को मुंबई में आयोजित यह पुरस्कार समारोह पहली बार था जब इस वैश्विक पर्यावरण पहल का आयोजन भारत में किया गया। सोनम इस कार्यक्रम में प्रस्तुतकर्ताओं और उपस्थित लोगों में शामिल थीं। यह पहली बार नहीं है जब रिया ने अपने डिजाइनों में विरासत (हेरिटेज) से जुड़ी शैली को अपनाया है। इससे पहले भी, करीना कपूर खान की स्टाइलिंग करते समय उन्होंने इसी तरह के विरासत–आधारित तरीके का इस्तेमाल किया था। इस महीने की शुरुआत में करीना के दिवाली लुक के लिए, रिया ने एक ऐसा मॉडर्न पहनावा तैयार किया, जिसमें भोपाल के शाही परिवार की पुरानी विरासती चीजें शामिल थीं। करीना ने डिजाइनर पुनीत बलाना का तैयार किया हुआ शुद्ध चांदी का काफतान और उससे मेल खाती पगड़ी पहनी थी। इस पगड़ी पर 200 साल पुरानी एक कलगी लगी थी, जो भोपाल के नवाब से जुड़ी है। इसके अलावा, उन्होंने 30 कैरेट का पन्ना भी पहना था, जिसका संबंध भोपाल की बेगम से है। इस पन्ने पर आयत–उल–कुर्सी खुदी हुई थी और ये सभी चीजें करीना के पति सैफ अली खान के परिवार की ओर से आई थीं।



गणेश आचार्य की फिल्म 'गणेश, डस्ट टू स्टारडस्ट' को मिला यू सर्टिफिकेट, बिना कट के पास हुई फिल्म

गणेश आचार्य के निर्देशन में बनी फिल्म 'गणेशरू डस्ट टू स्टारडस्ट' ने सेंसर प्रमाणन के दौरान एक खास मुकाम हासिल किया है। केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड (सीबीएफसी) ने फिल्म को बिना किसी कट या बदलाव के यू सर्टिफिकेट दिया है। इसके साथ ही यह उन चुनिंदा फिल्मों में शामिल हो गई है, जिन्हें बिना किसी संशोधन के यह प्रमाणन मिला है। इससे पहले 'रामायण' और 'हनुमान अंश' जैसे प्रोजेक्ट्स भी इस सूची में जगह बना चुके हैं। यू सर्टिफिकेट उन फिल्मों को दिया जाता है, जिन्हें सभी आयु वर्ग के दर्शकों के लिए उपयुक्त माना जाता है। 'गणेश डस्ट टू स्टारडस्ट' को बिना किसी बदलाव के यह प्रमाणपत्र मिलना फिल्म की रिलीज से पहले एक उल्लेखनीय बात है। जहां प्रमाणन के दौरान कई फिल्मों को कट या संशोधन के सुझाव मिलते हैं, वहीं इस फिल्म को मूल रूप में ही मंजूरी मिली है। फिल्म में डांस, ड्रामा और इमोशन्स के जरिए सपनों को पूरा करने की जद्दोजहद दिखाई जाएगी। इसकी कहानी महत्वाकांक्षाओं, मुश्किल हालात और अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए किए जाने वाले त्याग पर आधारित है। फिल्म यह दिखाने की कोशिश करती है कि किसी मुकाम तक पहुंचने के पीछे कितनी मेहनत और संघर्ष छिपा होता है। गणेश आचार्य ने लिखी और निर्देशित की फिल्मट2एस प्रोडक्शन एंड एंटरटेनमेंट द्वारा प्रस्तुत इस फिल्म का निर्माण सौंदर्या आचार्य ने किया है। गणेश आचार्य ने फिल्म की कहानी लिखने के साथ इसके निर्देशन की कमान भी संभाली है। वहीं, पटकथा और संवाद लिखने में दिगांगना सूर्यवंशी ने उनका साथ दिया है। फिल्म 11 दिसंबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। यू सर्टिफिकेट मिलने के बाद अब यह फिल्म अपनी थिएट्रिकल रिलीज के लिए तैयार है। डांस, ड्रामा और संघर्ष को एक साथ पेश करने वाली इस कहानी से दर्शकों को क्या अनुभव मिलता है, यह रिलीज के बाद ही पता चलेगा।

शशांक खेतान की नई फिल्म 'ऐसी दीवानगी देखी नहीं कहीं' का ऐलान, सुभान और ऐराह करेंगे डेब्यू



निर्देशक शशांक खेतान अपनी नई फिल्म 'ऐसी दीवानगी देखी नहीं कहीं' के जरिए दर्शकों के सामने प्यार, जुनून और बदले की एक अनोखी कहानी लेकर आ रहे हैं। फिल्म के टाइटल अनाउंसमेंट वीडियो के साथ उन्होंने नए कलाकार सुभान और ऐराह को पेश किया है, जो इस फिल्म से बड़े पर्दे पर अपनी शुरुआत करने जा रहे हैं। वीडियो ने फिल्म की कहानी को लेकर दर्शकों के बीच उत्सुकता बढ़ा दी है। फिल्म के टाइटल अनाउंसमेंट वीडियो में शुरुआत एक प्रेमी जोड़े के खूबसूरत और निजी पल से होती है, लेकिन कुछ ही देर में सामने आने वाला एक अप्रत्याशित दृश्य कहानी का माहौल बदल देता है। वीडियो में रोमांस के साथ रहस्य और गहराई का संकेत मिलता है। वहीं, फिल्म का पोस्टर भी इस बात की ओर इशारा करता है कि दोनों किरदारों की प्रेम कहानी आगे चलकर एक अलग और चौंकाने वाला मोड़ ले सकती है। शशांक खेतान इससे पहले भी अपनी फिल्मों के जरिए नई जोड़ियों को दर्शकों के सामने ला चुके हैं।

'हम्प्टी शर्मा की दुल्हनिया' में वरुण धवन और आलिया भट्ट की जोड़ी, जबकि 'धड़क' में जाह्नवी कपूर और ईशान खट्टर की केमिस्ट्री को दर्शकों ने पसंद किया था। अब फिल्ममेकर सुभान और ऐराह के साथ एक नई जोड़ी पेश कर रहे हैं। दोनों कलाकारों की ऑनस्क्रीन केमिस्ट्री फिल्म की खासियतों में से एक हो सकती है।



मिनटों में तैयार करें कुरकुरा केरल अनियन वड़ा, ये आसान रेसिपी करेगी सबको दीवाना

हम सभी को हर दिन एक जैसा नाश्ता करके बोरियत होने लगती है। ऐसे में अगर नाश्ते में कुरकुरा, नया और स्वाद से भरपूर कुछ खाने को मिल जाए, तो सुबह की शुरूआत खास हो जाती है। वहीं अगर साउथ इंडियन डिश की बात की जाए, तो सभी डिश स्वाद में एक से बढ़कर एक होती हैं। जिसको खाना हर कोई पसंद करता है। ऐसी ही एक डिश वड़ा है। खासकर केरल स्टाइल अनियन वड़ा। अनियन वड़ा न सिर्फ टेक्सचर और खुशबू में बल्कि स्वाद में भी लाजवाब होता है। ऐसे में अगर आप भी रोजाना एक ही तरह के नाश्ते से बोर हो चुकी हैं, तो आप सुबह के नाश्ते के लिए साउथ इंडिया का मशहूर केरल स्टाइल अनियन वड़ा बना सकती हैं।

ऐसे बनाएं केरल स्टाइल अनियन वड़ा

सबसे पहले 5 प्याज को खूब पतला और लंबा काट लें।

अब एक कटोरे में कटे हुए प्याज को डालें और इसमें एक चम्मच नमक डालें।

फिर इसमें एक छोटा चम्मच मिर्च पाउडर, 1 इंच अदरक, 2 मिर्च, 1 छोटा चम्मच सौंफ, 2 बड़े चम्मच धनिया और कुछ करी पत्ते डालें।

इसके बाद कटोरे में 2 बड़े चम्मच बेसन, (कप मैदा और चुटकी भर हींग डालें।

इन सभी चीजों को अच्छे से मिलाएं और सुनिश्चित करें कि सभी सामग्री अच्छे से मिक्स हो गई है।

वहीं आवश्यकतानुसार मैदा डालें और मिश्रण अपने आकार का बनाएं।

अब हाथों पर हल्का तेल लगाकर वड़े को आकार दें और गरम तेल में मीडियम आंच पर तलें।

वहीं बीच–बीच में चलाते रहें और तब तक भूनें, जब तक वड़ा सुनहरा न भुन जाए।

जब वड़ा कुरकुरा और सुनहरा हो जाए तो इसको निकाल लें।

इस आसान तरीके से केरल स्टाइल अनियन वड़ा बनकर तैयार हो जाएगा।

टिप्स

बता दें कि प्याज को जितना हो सके उतना लंबा और पतला काटें।

वहीं मिश्रण में पानी नहीं डालना चाहिए।

वड़े में सौंफ डालना न भूलें।

मिश्रण में एक चम्मच सूजी या फिर चावल का आटा जरूर मिलाएं।



बार–बार सूखता है मुंह? इसे बिल्कुल भी ना करें नजरअंदाज, हो सकती है ये बीमारी!

मुंह सूखना काफी आम बात होती है। ज्यादातर लोग इसको लेकर ज्यादा सोचते नहीं हैं। लेकिन इसे अनदेखा करना समस्या पैदा कर सकता है क्योंकि मुंह सूखना कई गंभीर बीमारियों की तरफ इशारा करता है। आइए जानते हैं मुंह सूखने की समस्या क्या है, यह क्यों होता है, इससे कौन सी बीमारियों के संकेत मिलते हैं और इससे बचने के क्या–क्या उपाय होते हैं...

मुंह सूखने की समस्या क्यों होती है

मुंह सूखने की समस्या तब होती है, जब लार ग्रंथियां लार बनाने का काम करना बंद कर देती हैं। इसे जेरोस्टोमिया कहा जाता है। लार बनना शरीर की एक जरूरी प्रक्रिया है। लार का काम दांतों के बैक्टीरिया से बनने वाले एसिड को खत्म करना होता है। इससे दांतों में कीड़े नहीं लगते हैं। यह खाना को निगलने में मदद करती है। जब मुंह सूखने लगता है, तब ये सारे फंक्शन्स प्रभावित होते हैं।

मुंह सूखने इन बीमारियों का हो सकता है इशारा

डायबिटीज

रूमेटाइट अर्थराइटिस

हाइपरटेंशन

एनेमिया

पार्किंसंस डिजीज

मुंह सूखने के कारण

डिहाइड्रेशन की वजब से मुंह सूखता है। कुछ एलोपैथिक दवाईयों की वजह से भी ऐसा हो सकता है। कैंसर में केमोथ्रेपी के चलते हो सकती है ये समस्या। पेट की खराबी की वजह से यह समस्या हो सकती है।

क्या होते हैं मुंह सूखने के लक्षण

मुंह से बदबू आना, खाना चबाने और निगलने में दिक्कत होना, लार का गाढ़ा होना, दांतों में कीड़े लगना, मुंह का स्वाद फीका पड़ना, और मसूड़ों में खुजली जैसी समस्याएँ एक–दूसरे से जुड़ी मौखिक स्वास्थ्य स्थितियाँ हो सकती हैं, जो अक्सर खराब ओरल हाइजीन, संक्रमण, पोषण की कमी या अन्य स्वास्थ्य कारणों से उत्पन्न होती हैं।



क्या सच में लकड़ी छूने से नहीं लगती बुरी नजर, क्यों कहते हैं लोग टच वुड

जब हम अपनी या अपने परिवार की सफलता, सेहत या खुशकिस्मती की चर्चा करते हैं, तो अक्सर पास में रखी लकड़ी को छूकर लोग कहते हैं टच वुड। लेकिन क्या सच में लकड़ी छूने से बुरी नजर नहीं लगती? आइए जानते हैं इसके पीछे की परंपरा, मान्यता और ज्योतिषीय दृष्टि।

बुरी नजर या ईवेल आई का डर केवल भारत में नहीं बल्कि पूरी दुनिया में माना जाता है। इसके प्रभाव से बचने के लिए लोग कई उपाय और टोटके करते हैं। ज्वनबीॅववक कहना भी इन्हीं उपायों में से एक है। जब लोग अपनी या परिवार की किसी उपलब्धि, सफलता या खुशकिस्मती की चर्चा करते हैं, तो लकड़ी की किसी वस्तु को छूकर ज्वनबी ॅववक कहते हैं। इसका उद्देश्य है बुरी नजर या दुर्भाग्य से बचाव। वैज्ञानिक दृष्टि से इसका कोई प्रमाण नहीं है, लेकिन परंपरा, मान्यता और ज्योतिष के अनुसार यह एक सकारात्मक और प्रतीकात्मक उपाय माना जाता है।

टच वुड कहने की परंपरा

लकड़ी छूकर टच वुड कहने का मूल विचार यह है कि लकड़ी में सकारात्मक ऊर्जा, स्थिरता और संरक्षण का भाव होता है। मान्यता है कि जब लकड़ी को छूकर टच वुड कहा जाता है, तो यह नकारात्मक ऊर्जा को कम करता है और लोगों को मानसिक सुरक्षा और भरोसा देता है।

टच वुड कहने की शुरुआत

प्राचीन पैगन सभ्यताः प्राचीन पैगनों का मानना था कि पेड़–पौधों में देवी–देवताओं और बुरी आत्माओं का वास होता है। लकड़ी छूने से वे दैवीय शक्ति से जुड़ रहे होते हैं और बुरी आत्माओं से अपनी खुशकिस्मती बचा रहे होते हैं।

ईसाई धर्मः ईसाई धर्म में ईसा मसीह के क्रूस की लकड़ी को पवित्र माना जाता था। लोग लकड़ी को छूकर ईश्वर का आशीर्वाद मांगते थे और दैवीय सुरक्षा की कामना करते थे।

ज्योतिषीय दृष्टि

ज्योतिषाचार्य बताते हैं कि लकड़ी का संबंध मुख्य रूप से बृहस्पति (गुरु) और चंद्र जैसे शुभ ग्रहों से होता है।

बृहस्पतिः संरक्षण और सकारात्मक ऊर्जा से जुड़ा।

चंद्रः भावनात्मक स्थिरता और मानसिक संतुलन से जुड़ा।

लकड़ी को छूना शुभ ग्रहों की ऊर्जा को आमंत्रित करने और नकारात्मक ऊर्जा को कम करने वाला प्रतीकात्मक उपाय माना जाता है। सच तो यह है कि लकड़ी छूने या टच वुड कहने से बुरी नजर का कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है, लेकिन यह परंपरा, मानसिक विश्वास और प्रतीकात्मक सुरक्षा का प्रतीक जरूर है।

चेहरे पर चाहिए इंस्टेंट ग्लो ? हल्दी और मलाई का ये जादुई पेस्ट देगा दमकती त्वचा



पार्लर के महंगे फेशियल और केमिकल युक्त उत्पादों से थक चुकी महिलाएं अब अपनी बेजान त्वचा को हल्दी और मलाई के प्राकृतिक पेस्ट से नया निखार दे सकती हैं। यह घरेलू नुस्खा त्वचा को गहराई से पोषित कर उसे मुलायम और चमकदार बनाने में सहायक है। नियमित उपयोग से बिना किसी बड़े खर्च के स्किन पर प्राकृतिक ग्लो वापस पाया जा सकता है। महिलाएं अपने चेहरे के निखार के लिए न जाने क्या–क्या नहीं करती हैं। कुछ महिलाएं पार्लर जाकर महंगे–महंगे फेशियल और क्लिन–अप करवाती है, तो कुछ महंगे प्रोडक्ट खरीदकर का इस्तेमाल करती है। लेकिन एक समय के बाद उनकी त्वचा बेजान हो जाती है। अगर आप भी अपने चेहरे का ग्लोइंग बनाना चाहती हैं बिना किसी खर्च के, तो यह लेख आपके लिए है। अब आप हल्दी और मलाई के पेस्ट से सॉफ्ट और ग्लोइंग स्किन पा सकती हैं। यह पेस्ट को नेचुरल तरीके से चमकदार बनाता है। आइए आपको बताते हैं कैसे बनाएं हल्दी और मलाई का पेस्ट।

हल्दी और मलाई का पेस्ट

स्किन के निखारने के लिए आप ने कई तामझाम अपनाएं होंगे, लेकिन आपको मनचाह रिजल्ट नहीं मिला होगा। अब आप अपनी त्वचा की खूबसूरती को बरकरार रखने के लिए मलाई और हल्दी का पेस्ट तैयार करें। इसे आप कम समय में घर पर ही तैयार कर सकते हैं।

हल्दी और मलाई पेस्ट के लिए सामग्री

– हल्दी

– मलाई

– गुलाब जल

हल्दी और मलाई पेस्ट बनाने का तरीका

– सबसे पहले आप एक साफ कटोरी में ताजी मलाई बना लें।

– अब इसमें चुटकी भर हल्दी मिक्स कर लें और इन दोनों सामग्री को अच्छे से मिक्स कर लें।

– इस पेस्ट में गुलाब जल को भी डाल दें, आप चाहे तो गुलाब जल का इस्तेमाल कर सकती हैं।

– गुलाब जल आपके हल्दी और मलाई वाले पेस्ट को खुशबूदार बना देगा और आपकी त्वचा को सॉफ्ट बनाएगा।

– इस पेस्ट को रात को सोने से पहले चेहरे पर जरुर लगाएं।

– हल्दी और मलाई के इस पेस्ट को आप कम से कम 40 मिनट तक चेहरे पर लगा रहने दें।

– इसके बाद साफ पानी से चेहरे को धो लें और फेस मॉइस्चराइजर लगा लें।

– यह आपकी स्किन को ग्लोइंग के साथ ही मुलायम बनाएगा। इस पेस्ट को आप एक हफ्ते में कम से कम दो बार जरुर लगाएं।

– इस पेस्ट को आप गर्दन पर लगा सकते हैं। सर्दियों के लिए यह पेस्ट जादुई है, क्योंकि यह स्किन को मॉइस्चराइज करता है।



आपका धनिया हफ्तों तक रहेगा हरा-भरा और फ्रेश! सर्दियों में स्टोर करने का बेस्ट तरीका

हरा धनिया को हफ्तों तक ताजा और हरा–भरा रखने के लिए उसे धोने से बचें या धोकर अच्छी तरह सुखा लें, क्योंकि नमी पत्तियों को सड़ा देती है। एयरटाइट डिब्बे, अखबार, टिश्यू पेपर, पन्नी या एल्युमिनियम फॉयल का उपयोग करके फ्रिज में स्टोर करने से आप धनिया को लंबे समय तक ताजा रख सकते हैं। यह तरीका सर्दियों में धनिया को पीला होने से बचाता है और आपके किचन के लिए एक उपयोगी टिप है।

सर्दी का मौसम हो या गर्मी, हर सीजन में हरा धनिया खूब खाया जाता है। यह खाना को भी टेस्टी बनाता है। हर धनिया खाने से सेहत भी बढ़िया रहती है। यह सब्जी–दाल का स्वाद बढ़ाता है। हरा धनिया ज्यादातर लोग फ्रिज में स्टोर करके रखते हैं, जिससे ये हरी बनी रहे। सर्दियों के मौसम में कुछ ही दिनों में इसकी पत्तियां पीली होने लगती है। यदि आप भी हरे धनिया को खराब होने से बचाना चाहते हैं, तो इसे सही ढंग से स्टोर करना जरुरी है। इस लेख में हम आपको बताएंगे हरा धनिया को स्टोर कैसे करें।

बिना धोएं

बाजार से हरे धनिया लाने के बाद भूलकर भी उसे धोना नहीं चाहिए। धनिया धोने से पानी लगा रहता है और ये पत्तियां सड़ने लगती हैं। यदि आप धोते हैं, तो इसे सुखाकर ही रखें। वरना धनिया दो दिन के अंदर ही खराब हो जाएगा।

एयर टाइट डिब्बा

धनिया को आप एयर टाइट डिब्बे में बंद करके रख सकते हैं। एयर टाइट डिब्बे में हरी धनिया खराब नहीं होगी और पत्तियां पीली नहीं पड़ेगी।

अखबार

आप धनिया को अखबार में अच्छे से लपेटकर फ्रिज में रख सकते हैं। अखबार में नमी नहीं पहुंचती और ये धनिया को हरा–भरा रखेगा। धनिया को अखबार में लपेटकर पन्नी में रख सकते हैं।

टिश्यू पेपर

अखबार न हो, तो आप टिश्यू पेपर को धनिया के ऊपर लपेट सकते हैं। इससे आपका धनिया भी हरा बना रहेगा और इसे आप फ्रिज में स्टोर कर सकते हैं।

पन्नी

हरे धनिया को आप पन्नी में बांधकर रख सकते हैं। ध्यान रहे है कि इसमेम पानी नहीं होना चाहिए। अगर पन्नी में पानी होगा, तो धनिया खराब हो जाएगी।

एल्युमिनियम फॉयल

हरे धनिया को हरा–भरा बनाकर रखने के लिए आप एल्युमिनियम फॉयल का इस्तेमाल कर सकते हैं। एल्युमिनियम फॉयल में धनिया को अच्छे से लपेट लें और फिर इसको फ्रिज में स्टोर करके रख दें। आपका हरा धनिया कई हफ्तों तक हरा–भरा रहेगा।

संक्षिप्त



टाटा स्टील ओडिशा में बनाएगी हाइड्रोजन, न्जपसपजल ऋसवइंस के साथ मिलाया हाथ

इस्पात कंपनी टाटा स्टील ओडिशा के कलिंगनगर संयंत्र में उत्पादन के दौरान निकलने वाली गैस का इस्तेमाल कर हाइड्रोजन बनाने की परियोजना शुरू करेगी। कंपनी ने इसके लिए अमेरिका की यूटिलिटी ग्लोबल के साथ साझेदारी की है। टाटा स्टील ने कहा कि देश में इस तरह की यह पहली परियोजना होगी। दोनों कंपनियां प्रस्तावित परियोजना के लिए संयुक्त रूप से फ्रंट–एंड इंजीनियरिंग एवं डिजाइन (एफईईडी) अध्ययन करेंगी और फिर उसके आधार पर टाटा स्टील का निदेशक मंडल निवेश के बारे में अंतिम निर्णय (एफआईडी) लेगा। प्रस्तावित संयंत्र की दैनिक उत्पादन क्षमता 10 टन हाइड्रोजन की होगी। इसमें यूटिलिटी ग्लोबल की एच2जेन प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल किया जाएगा। इस प्रौद्योगिकी के जरिये इस्पात उत्पादन प्रक्रिया के दौरान निकलने वाली गैस से उच्च शुद्धता वाला हाइड्रोजन तैयार किया जाएगा। टाटा स्टील के उपाध्यक्ष (प्रौद्योगिकी, शोध एवं विकास, नवीन सामग्री कारोबार) सुबोध पांडेय ने कहा, ''इस्पात क्षेत्र में कार्बन उत्सर्जन घटाने वाली किसी भी तकनीक के लिए परिचालन वाले इस्पात संयंत्र की जटिलताओं और बड़े पैमाने पर काम करने में सक्षम होना जरूरी है। एच2जेन जैसी प्रौद्योगिकी मौजूदा बुनियादी ढांचे का इस्तेमाल करते हुए उत्सर्जन घटाने का अवसर देती है।'' यूटिलिटी ग्लोबल ने इस्पात संयंत्रों में उत्पन्न होने वाली कार्बन मोनोऑक्साइड की अधिकता वाली गैस से उच्च शुद्धता वाला हाइड्रोजन बनाने की एक विद्युत–रासायनिक प्रक्रिया विकसित की है। कनाडा में एक इस्पात संयंत्र में ब्लास्ट फर्नेस से निकलने वाली वास्तविक गैस का इस्तेमाल कर इस तकनीक का परीक्षण किया जा चुका है। कंपनी ने कहा कि एफईईडी अध्ययन के बाद, निदेशक मंडल से निवेश की मंजूरी मिलने पर कलिंगनगर में हाइड्रोजन संयंत्र स्थापित कर उसका परिचालन शुरू किया जाएगा। यह पहल टाटा स्टील की कम कार्बन उत्सर्जन वाली इस्पात उत्पादन परियोजनाओं का हिस्सा है। कंपनी ने 2045 तक शुद्ध रूप से शून्य कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य रखा है।

स्पाइसजेट को मिलेगी नई ताकत, 5500 करोड़ रुपये जुटाने के प्लान पर बोर्ड ने लगाई मुहर

वित्तीय संकट से जूझ रही एयरलाइन कंपनी स्पाइसजेट के निदेशक मंडल ने बुधवार को कंपनी की वित्तीय स्थिति मजबूत करने के लिए 5,500 करोड़ रुपये तक जुटाने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। स्पाइसजेट वित्तीय और परिचालन संबंधी कई चुनौतियों का सामना कर रही है। कंपनी ने बयान में कहा कि बुधवार को हुई निदेशक मंडल की बैठक में संभावित नए निवेशकों के साथ निवेश को लेकर चल रही बातचीत की जानकारी दी गई। बयान के अनुसार, निदेशक मंडल ने कंपनी की वित्तीय स्थिति मजबूत करने, परिचालन क्षमता बढ़ाने और एयरलाइन को फिर से पटरी पर लाने के लिए 5,500 करोड़ रुपये तक जुटाने के प्रस्ताव को मंजूरी दी है। निदेशक मंडल ने प्रबंधन को इस प्रक्रिया को जल्द से जल्द पूरा करने की दिशा में काम करने का निर्देश भी दिया है। बयान में कहा गया, ''प्रस्तावित पूंजी जुटाने की प्रक्रिया इक्विटी और अन्य वित्तीय माध्यमों से पूरी की जा सकती है। इसके लिए जरूरी मंजूरियां लेनी होंगी।'' इसके अलावा, निदेशक मंडल ने कंपनी की अधिकृत शेयर पूंजी 2,000 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 7,500 करोड़ रुपये करने के प्रस्ताव को भी मंजूरी दी है। इसके लिए शेयरधारकों और नियामकीय मंजूरी लेनी होगी। स्पाइसजेट ने कहा कि वह बेहद चुनौतीपूर्ण माहौल में परिचालन कर रही है। भू–राजनीतिक घटनाक्रम और हवाई क्षेत्र पर लगी पाबंदियों से उसके परिचालन पर दबाव पड़ा है। कंपनी ने कहा, ''पिछले कुछ महीनों में विमान ईंधन (एटीएफ) की कीमतें दोगुने से अधिक बढ़ गई हैं। इससे परिचालन लागत में काफी इजाफा हुआ है।'' कंपनी के अनुसार, प्रस्तावित पूंजी जुटाने से उसे इन चुनौतियों से निपटने, वित्तीय स्थिति मजबूत करने, विमानों के बेड़े का विस्तार करने और परिचालन संबंधी जरूरतें पूरी करने में मदद मिलेगी। बयान में कहा गया कि इससे कंपनी को अपना उड़ान नेटवर्क बहाल करने और कारोबार को अधिक मजबूत एवं टिकाऊ बनाने में भी मदद मिलेगी। स्पाइसजेट के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक अजय सिंह ने कहा कि पूंजी जुटाने से एयरलाइन कंपनी को फिर से खड़ा करने, परिचालन मजबूत करने और ब्रांड की प्रतिष्ठा बहाल करने का महत्वपूर्ण अवसर मिलेगा।

कोकिंग कोयले का भंडार सीमित, भारतीय टाटा स्टील आयात पर ही निर्भर रहेगी

टाटा स्टील के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) एवं प्रबंध निदेशक टीवी नरेंद्रन ने बुधवार को कहा कि भारत में कोकिंग कोयले का भंडार सीमित होने के कारण घरेलू इस्पात उद्योग को अपनी कच्चे माल की जरूरतें पूरी करने के लिए आयात पर निर्भर रहना पड़ेगा। घरेलू इस्पात क्षेत्र कोकिंग कोयले के लिए काफी हद तक आयात पर निर्भर है। भारत अपनी कोकिंग कोयले की करीब 90 प्रतिशत जरूरत आयात से पूरी करता है। यहां 'आईएसए कमिंग कोल समिट' से इतर पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने कहा, ''भारत में कोकिंग कोयले की उपलब्धता हमारे पास मौजूद भंडार से सीमित है। इसलिए मुझे नहीं लगता कि भारत में उपलब्ध कोकिंग कोयला घरेलू इस्पात उद्योग की जरूरतों को मात्रा और गुणवत्ता, दोनों के लिहाज से पूरा करने के लिए पर्याप्त है। ऐसे में हम आयात पर निर्भर रहेंगे।'' उन्होंने कहा कि ऑस्ट्रेलिया भारत के लिए बेहतर गुणवत्ता वाले कोकिंग कोयले का एक प्रमुख स्रोत बना हुआ है। देश के कुल कोकिंग कोयला आयात में उसकी हिस्सेदारी 50 प्रतिशत से अधिक है। उन्होंने कहा, ''बेशक, सबसे अच्छी गुणवत्ता वाला कोकिंग कोयला ऑस्ट्रेलिया से उपलब्ध होता है। यही वजह है कि देश में आने वाले कोकिंग कोयले में अब भी ऑस्ट्रेलिया की हिस्सेदारी 50 प्रतिशत से अधिक है।'' कोकिंग कोयले को धातुकर्म कोयला भी कहा जाता है। ब्लास्ट फर्नेस प्रक्रिया के जरिये इस्पात बनाने में यह एक प्रमुख कच्चा माल है।

ट्रेविस हेड को रिलीज करने के पीछे क्या थी वजह ?: सनराइजर्स हैदराबाद के कोच विटोरी ने बताई सच्चाई, आभार भी जताया

वेलिंगटन। सनराइजर्स हैदराबाद ने आईपीएल 2027 से पहले ऑस्ट्रेलियाई ओपनर ट्रेविस हेड को रिलीज कर दिया है। पिछले तीन सीजन से टीम की बल्लेबाजी की अहम कड़ी रहे हेड अब फ्रेंचाइजी की अगली योजनाओं का हिस्सा नहीं होंगे। उनके जाने के बाद सवाल उठ रहा था कि आखिर हैदराबाद ने अपने इस भरोसेमंद बल्लेबाज को क्यों छोड़ा? अब टीम के मुख्य कोच डेनियल विटोरी ने इसकी वजह बताई है। उन्होंने खुलासा किया कि हेड ने खुद ऑस्ट्रेलिया के लिए अपनी प्रतिबद्धताओं को प्राथमिकता देते हुए आगामी आईपीएल सीजन से बाहर रहने का फैसला किया है। विटोरी के मुताबिक, इस बार खिलाड़ियों को रिटेन करने के फैसले में मौजूदा साइकिल का आखिरी साल होना अहम रहा। फ्रेंचाइजी अपने मुख्य खिलाड़ियों को बरकरार रखना चाहती थी, लेकिन साथ ही टीम की कमियों और खिलाड़ियों की उपलब्धता पर भी विचार कर रही थी। विटोरी ने शजियोस्टारश से कहा, 'रिटेंशन के पीछे इस बार मुख्य फोकस इस बात पर था कि यह मौजूदा साइकिल का आखिरी साल है। हम अपने मुख्य खिलाड़ियों को बनाए रखना चाहते थे, क्योंकि हमारा पिछला सीजन अच्छा रहा था। इसके साथ ही हमें पता था कि टीम में कुछ सुधार की जरूरत है और खिलाड़ियों की उपलब्धता को लेकर भी कुछ दिक्कतें थीं।' उन्होंने कहा कि हेड की उपलब्धता इस फैसले में बड़ा कारक रही। ऑस्ट्रेलियाई ओपनर ने आईपीएल 2027 में नहीं खेलने का फैसला किया है, क्योंकि उनके लिए आने वाला साल राष्ट्रीय टीम के लिहाज से काफी महत्वपूर्ण है। विटोरी ने कहा, 'ट्रेविस हेड पिछले तीन वर्षों से टीम का अहम हिस्सा रहे हैं। उन्होंने इस सीजन से बाहर रहने का फैसला किया है। ऑस्ट्रेलिया के लिए उनका आने वाला साल बहुत महत्वपूर्ण है और वह उसी को प्राथमिकता दे रहे हैं। यह दुख की बात है कि वह हमारे साथ नहीं होंगे, लेकिन पिछले तीन सीजन में उनके योगदान के लिए हम उनके बहुत आभारी हैं।'



हेड की जगह किस खिलाड़ी पर होगी नजर?

हेड के जाने से हैदराबाद की बल्लेबाजी में एक जगह खाली हो गई है। ऐसे में फ्रेंचाइजी आगामी नीलामी में ऐसे बल्लेबाज की तलाश करेगी, जो टीम के मौजूदा संयोजन में फिट बैठ सके। विटोरी ने संकेत दिया कि टीम दूसरी फ्रेंचाइजी की ओर से रिलीज किए गए खिलाड़ियों पर भी नजर रखेगी। उन्होंने कहा, 'हर टीम अपनी कमियों को देखती है और सुधार करने की कोशिश करती है। हो सकता है कि हमें किसी दूसरी टीम से रिलीज किया गया कोई ऐसा खिलाड़ी मिल जाए, जो हमारी टीम और खेलने के तरीके के लिए बिल्कुल सही हो।'

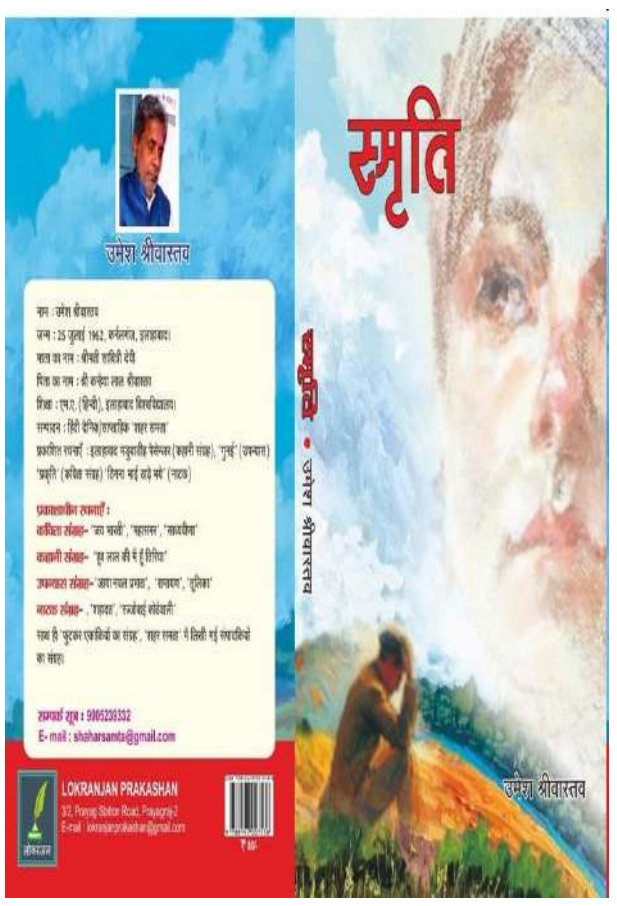
हैदराबाद में खेलने का फायदा उठा सकते हैं नए खिलाड़ी

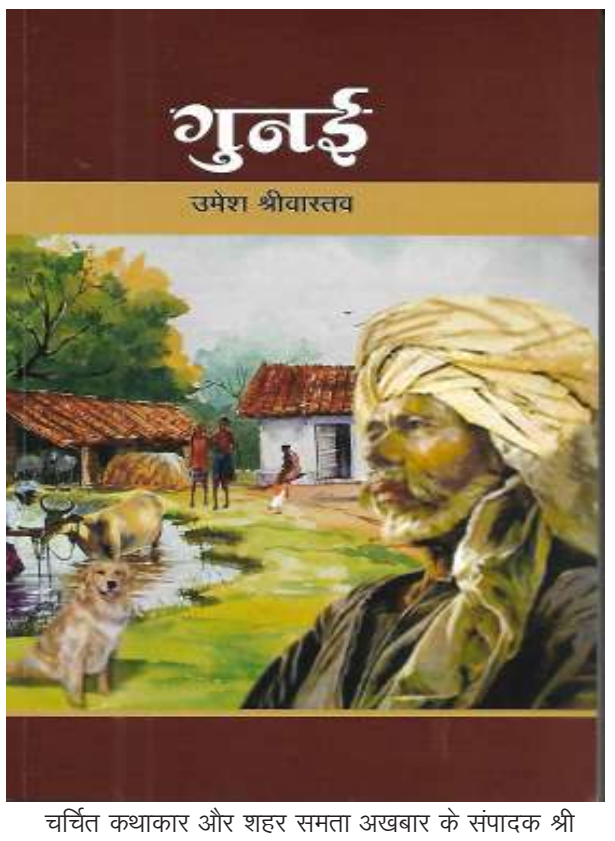
विटोरी ने हैदराबाद के घरेलू मैदान की परिस्थितियों का जिक्र करते हुए कहा कि कुछ बल्लेबाज ऐसे हो सकते हैं, जिन्हें दूसरी टीमों में अपेक्षित सफलता नहीं मिली हो, लेकिन वे यहां अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं। उन्होंने कहा, 'बल्लेबाजी के लिहाज से हैदराबाद में खेलना बहुत अच्छा रहता है। अगर किसी खिलाड़ी को किसी खास मैदान पर सफलता नहीं मिली है, तो वह यहां आकर शानदार प्रदर्शन कर सकता है। हम अपनी टीम को बेहतर बनाने के लिए ऐसे ही खिलाड़ियों की तलाश करेंगे।' विटोरी ने यह भी भरोसा जताया कि टीम के पास पहले से मजबूत टीम और प्लेइंग इलेवन है। फ्रेंचाइजी बड़े बदलाव करने के बजाय एक–दो ऐसे खिलाड़ियों को जोड़ना चाहेगी, जो टीम की जरूरतों को पूरा कर सकें।

आईपीएलः टीम संतुलन के लिए कुलदीप यादव को छोड़ ऋषभ पंत को चुना, बोले सौरव गांगुली

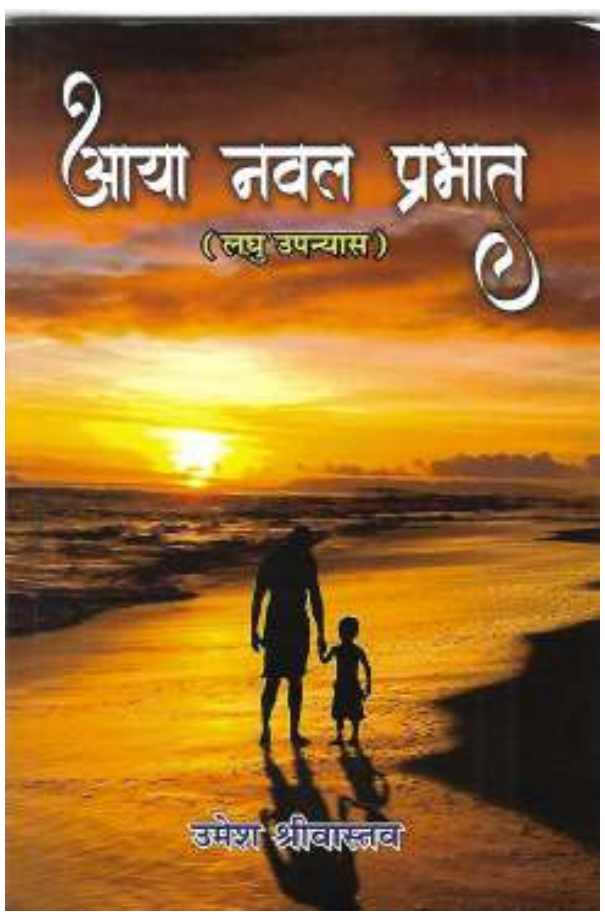
दिल्ली कैपिटल्स के मुख्य कोच सौरव गांगुली ने कहा कि कुलदीप यादव को बाहर करके उनकी जगह ऋषभ पंत को टीम में शामिल करना 'बहुत मुश्किल' फैसला था, लेकिन टीम को 'संतुलन' बनाने के लिए एक भारतीय बल्लेबाज की जरूरत थी। गांगुली ने जियोस्टार से कहा, ''यह मुश्किल सौदा था क्योंकि कुलदीप एक बहुत ही खास क्रिकेटर हैं। वह लंबे समय तक दिल्ली कैपिटल्स से जुड़े हुए थे लेकिन 10 टीमों के आईपीएल में संतुलन बनाना बेहद महत्वपूर्ण होता है।'' उन्होंने कहा, ''हम एक बल्लेबाज की तलाश में थे। हमें ऋषभ पंत के रूप में घरेलू बल्लेबाज मिला, जिन्होंने दिल्ली के लिए अच्छा प्रदर्शन किया है। मेरी नजर में वह बेहतरीन क्रिकेटर हैं। लेकिन कुलदीप को बाहर करना बहुत मुश्किल फैसला था। अक्षर (पटेल) और आशुतोष को बाहर नहीं किया जा सकता था। वे हमारी टीम के महत्वपूर्ण अंग हैं।'' दिल्ली की टीम में इस बार स्टार तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क नहीं होंगे, जिन्होंने ऑस्ट्रेलिया की अपनी राष्ट्रीय टीम से खेलने को प्राथमिकता दी है और इस कारण फ्रेंचाइजी ने उन्हें बाहर कर दिया। गांगुली ने कहा, ''खिलाड़ियों को छोड़ने और उन्हें बरकरार रखने के पीछे की सटीक सोच प्रक्रिया का पता लगाना बहुत मुश्किल है। यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शन, फ्रेंचाइजी किसे महत्व देती है और फ्रेंचाइजी के अनुसार आईपीएल में मैच जीतने के लिए कौन सा खिलाड़ी काफी अच्छा है, इन सब बातों पर निर्भर करता है। साथ ही यह नीलामी में शामिल खिलाड़ियों पर भी निर्भर करता है।'' उन्होंने अगले महीने होने वाली नीलामी के बारे में कहा, ''यह छोटी नीलामी है, इसलिए फ्रेंचाइजी पिछले दो वर्षों के प्रदर्शन और अगले तीन वर्षों की अपनी जरूरतों को ध्यान में रखेगी। ऐसे में यह तय करने का कोई निश्चित नियम नहीं है कि यह सही है या वह गलत। यह भरोसे से जुड़ी बात है।'' आईपीएल में मुख्य कोच के रूप में अपने पहले कार्यकाल को लेकर गांगुली ने कहा कि वह उत्साहित हैं। उन्होंने कहा, ''आईपीएल में मुख्य कोच के तौर पर यह मेरा पहला अनुभव है। मैंने पिछले साल प्रिटोरिया कैपिटल्स के लिए यह भूमिका निभाई थी, लेकिन मैं बहुत उत्साहित हूं। आईपीएल बिल्कुल अलग चुनौती है।''

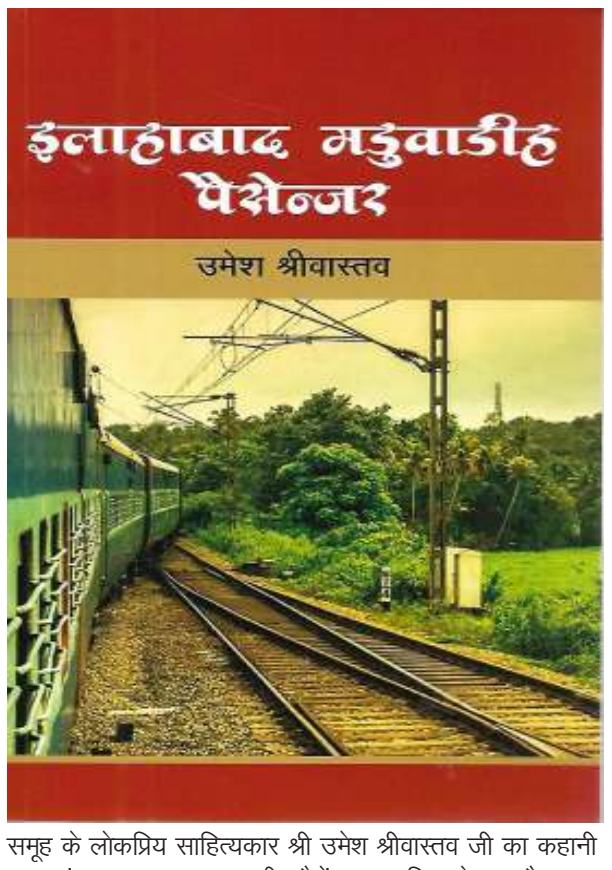




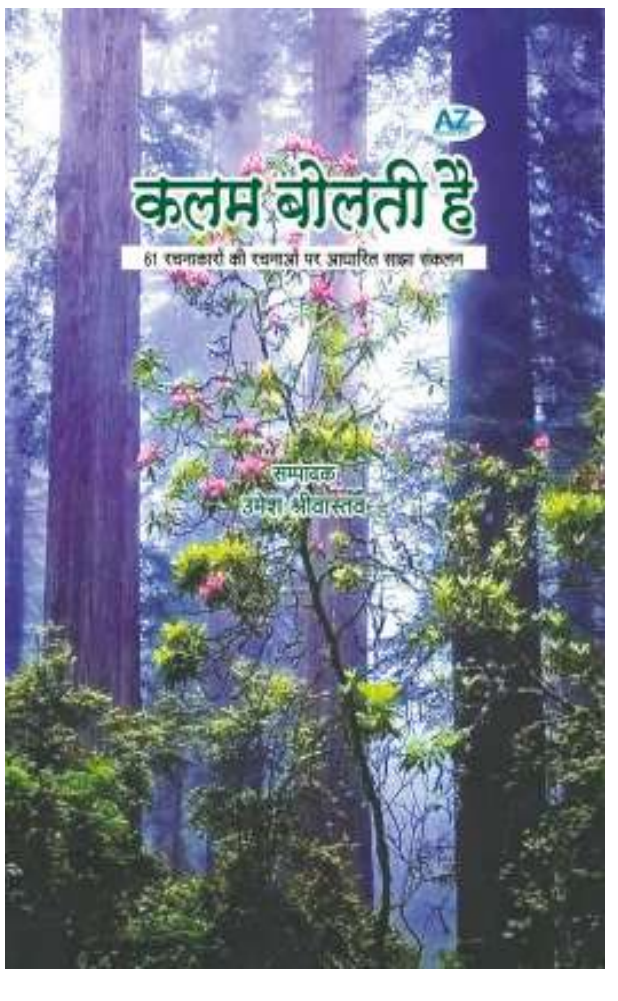


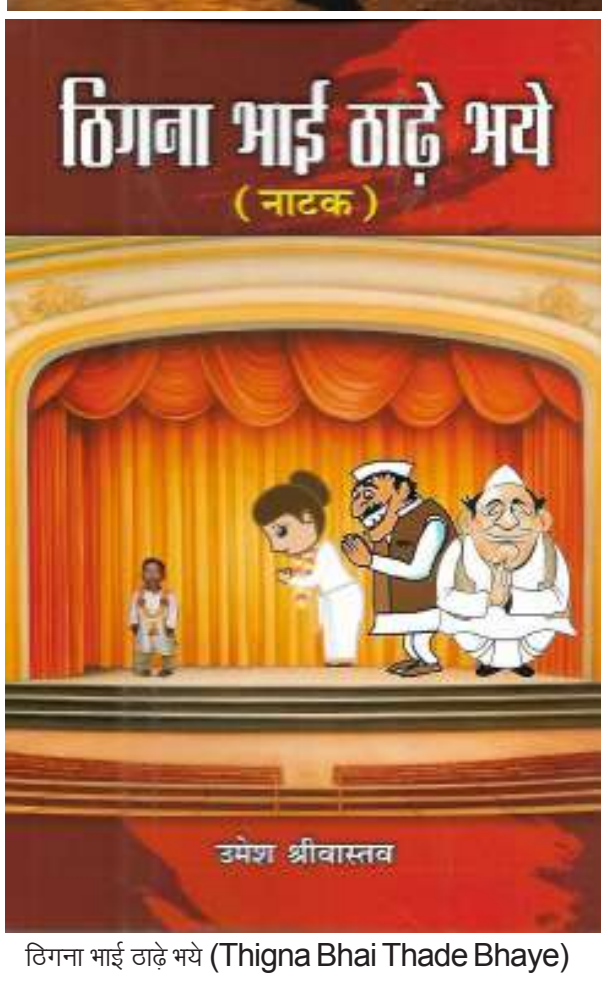
चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित





समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।





ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

Huawei पर आपराधिक साजिश केस अंतिम चरण में, US कोर्ट में बचाव पक्ष ने नकारे आरोप

चीन की दिग्गज दूरसंचार कंपनी हुआवेई टेक्नोलॉजीज के खिलाफ आपराधिक साजिश के मुकदमे की सुनवाई मंगलवार को अंतिम चरण में पहुंच गई। अभियोजन पक्ष ने अदालत से कहा कि कंपनी ने ईरान को अपने नागरिकों की जासूसी करने और अमेरिकी कंपनियों से चोरी करने में मदद की, जबकि बचाव पक्ष के वकील ने अमेरिका पर झूठी कहानी गढ़ने का आरोप लगाया। ब्रूकलिन की संघीय अदालत में करीब दो महीने तक चली सुनवाई के बाद बचाव पक्ष के वकील ब्रायन हेबरलिग ने अपनी अंतिम दलील में कहा कि संघीय अभियोजकों ने पहले ही हुआवेई को आपराधिक संगठन मान लिया था और इसी धारणा के आधार पर उसके खिलाफ मामला तैयार किया। उनकी यह दलील अमेरिकी सहायक अटॉर्नी मरेडिथ अरफा के एक दिन पहले दिए गए बयान के बाद आई। अरफा ने कहा था कि हुआवेई ने दो दशकों तक 170 देशों में काम करने वाले अपने दो लाख से अधिक कर्मचारियों को प्रतिस्पर्धात्मक लाभ हासिल करने और कारोबार बढ़ाने के लिए झूठ बोलने, धोखाधड़ी करने और चोरी करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने आरोप लगाया कि कंपनी ने अमेरिकी कंपनियों, वित्तीय प्रणाली और सरकार को निशाना बनाकर अपराध किए तथा ईरान को अपने नागरिकों की जासूसी करने के लिए उपकरण उपलब्ध कराए। हुआवेई दुनिया में वायरलेस दूरसंचार नेटवर्क के उपकरणों की सबसे बड़ी आपूर्तिकर्ता कंपनी है। हालांकि, सुरक्षा संबंधी चिंताओं के कारण उसे अमेरिका की दूरसंचार कंपनियों को उपकरण बेचने की अनुमति नहीं है। ब्रिटेन और कनाडा समेत कई अन्य पश्चिमी देशों ने भी उसके उत्पादों पर प्रतिबंध लगाए हैं। हेबरलिग ने कंपनी की उल्लेखनीय वृद्धि का श्रेय उसकी इंजीनियरिंग क्षमता, निवेश, नवाचार और प्रतिस्पर्धा को दिया। उन्होंने कहा कि अभियोजन पक्ष ने कुछ कर्मचारियों की गलतियों को आधार बनाया, जिन्हें उनकी गड़बड़ियां सामने आने के बाद कंपनी ने नौकरी से निकाल दिया था। उन्होंने यह भी कहा कि अभियोजकों ने कई मामलों में कंपनी पर प्रतिस्पर्धियों की बौद्धिक संपदा चुराने का आरोप लगाया, जबकि संबंधित सामग्री पहले से सार्वजनिक थी। उन्होंने कहा, जिस चीज को गुप्त रखा ही नहीं गया हो, उसे चुराने का सवाल ही नहीं उठता। हुआवेई मोबाइल फोन और अन्य उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद भी बनाती है, लेकिन उसे कारोबार के कुछ अन्य क्षेत्रों से बाहर कर दिया गया है। हाल के वर्षों में कृत्रिम मेधा (एआई) के बढ़ते इस्तेमाल के कारण माइक्रोप्रोसेसरों की मांग बढ़ने के बीच कंपनी ने चिप निर्माण के क्षेत्र में भी विस्तार किया है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के पहले कार्यकाल के दौरान उनके प्रशासन ने हुआवेई को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बताते हुए पश्चिमी देशों से अगली पीढ़ी के 'हाई–स्पीड वायरलेस नेटवर्क' में कंपनी के उपकरणों का इस्तेमाल नहीं करने की अपील की थी। अमेरिका ने 2019 की शुरुआत में कंपनी के खिलाफ आपराधिक आरोप घोषित किए थे और बाद में आरोपों का दायरा बढ़ाया। चीन के अधिकारियों ने अमेरिका पर आर्थिक दबाव बनाने और चीनी कंपनियों को निशाना बनाने के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा को बहाने के रूप में इस्तेमाल करने का आरोप लगाया है।

अमेरिका की अदालत का पेंटागन को झटका, 27 ट्रांसजेंडर सैनिकों को हटाने पर लगाई रोक

अमेरिका की एक संघीय अपील अदालत ने मंगलवार को पेंटागन (अमेरिकी रक्षा मंत्रालय का मुख्यालय) को दो दर्जन से अधिक ट्रांसजेंडर सैनिकों को सेना से बाहर करने से रोक दिया। अदालत ने कुछ महीने पहले भी फैसला सुनाया था कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन द्वारा लगाया गया प्रतिबंध गैरकानूनी है। अदालत का ताजा फैसला उसी पीठ के पहले के आदेश को लागू करता है। अब यह मामला एक बार फिर उच्चतम न्यायालय पहुंच सकता है, जिसने पहले एक अलग प्रकरण में फिलहाल इस प्रतिबंध को लागू रखने की अनुमति दी थी। ट्रंप प्रशासन ने कोलंबिया सर्किट की अमेरिकी अपील अदालत से एक जून के फैसले पर रोक लगाने का अनुरोध किया था। प्रशासन उच्चतम न्यायालय में इस मामले की सुनवाई कराने की अनुमति मांगने की तैयारी कर रहा है। तीन न्यायाधीशों की पीठ ने मंगलवार को एक के मुकाबले दो के बहुमत से प्रशासन की याचिका खारिज कर दी। उच्चतम न्यायालय ने पिछले साल प्रशासन के पक्ष में फैसला सुनाते हुए मुकदमे की सुनवाई जारी रहने के दौरान पेंटागन को प्रतिबंध लागू करने की अनुमति दी थी। अपील अदालत के न्यायाधीश रॉबर्ट विल्किंस ने न्यायाधीश जूडिथ रोजर्स की आंशिक सहमति के साथ जून में व्यवस्था दी थी कि पेंटागन की नीति का उद्देश्य लैंगिक पहचान के आधार पर लोगों को सेना से बाहर करना है। बहुमत के इस फैसले के तहत मुकदमा दायर करने वाले मौजूदा ट्रांसजेंडर सैनिकों को सेना से नहीं निकाला जा सकेगा, हालांकि नए ट्रांसजेंडर सैनिकों की भर्ती की अनुमति नहीं दी गई है। पेंटागन के प्रतिबंध को चुनौती देने वाले याचिकाकर्ताओं के वकीलों के मुताबिक, मंगलवार का आदेश 27 सैनिकों पर लागू होगा। 'नेशनल सेंटर फॉर एलजीबीटीक्यू राइट्स' के कानूनी निदेशक शैनन मिंटर ने कहा कि ये सभी सैनिक सम्मानित हैं और सेना के निर्धारित सभी मानकों पर खरे उतरे हैं। न्यायाधीश विल्किंस ने कहा कि प्रशासन यह साबित नहीं कर पाया है कि इन सैनिकों को सेना में बनाए रखने से सरकार को अपूरणीय नुकसान होगा या राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा पैदा होगा। उन्होंने यह भी कहा कि जून के फैसले का दायरा उस आदेश से सीमित था, जिस पर उच्चतम न्यायालय ने पिछले साल रोक लगाई थी।

सत्ता के लिए गाजा में बिछाई लाशें ? नेतन्याहू के खिलाफ अब बाइडेन ने भी मुंह खोल दिया



अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडन ने अपनी आने वाली किताब प्रॉमिस में अमेरिका में इजराइल की प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू पर गंभीर आरोप लगाते हुए उन्हें अपनी सत्ता बचाने के लिए झूठे वादे करने वाला नेता करार दिया है। सीएनएन में प्रकाशित इस संस्मरण में बाइडन ने खुलासा किया है कि सार्वजनिक रूप से एकजुट दिखने के बावजूद गजा युद्ध के लिए दोनों नेताओं के बीच पर्दे के पीछे गहरे मतभेद दिखते थे। बाइडन के मुताबिक अक्टूबर 2023 में हमास के हमलों के बाद इजराइल ने गजा में जो सैन्य कार्रवाई शुरू की उसमें आम नागरिकों और बच्चों की बढ़ती मौतों को लेकर वे बिल्कुल सहज नहीं थे। अपनी किताब में बाइडन ने लिखा कि नेतन्याहू ने कई बार आम नागरिकों की मौतों को कम करने और ज्यादा सावधानी बरतने का वादा किया लेकिन यह उनका एक जाना माना पहचाना हुआ पैटर्न बन चुका था। वे वादा तो करते थे और उसके तुरंत बाद ऐसी आक्रामक सैन्य कार्रवाई होती थी जिसमें और ज्यादा फिलिस्तीनी नागरिक मारे जाते थे। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति ने नेतन्याहू की विश्वसनीय नेता और राजनीतिक समझ पर सीधा सवाल उठाते हुए लिखा है। नेतन्याहू को ऐसे वादे करने में कोई हिचकिचाहट नहीं होती थी जिन्हें पूरा करने की न तो उनमें क्षमता थी और न ही कोई इरादा। बाइडन की मुताबिक नेतन्याहू इस बात को समझते थे कि आम नागरिकों की मौतों से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इजराइल की छवि खराब हो रही है और अमेरिका का समर्थन भी कमजोर पड़ रहा है। फिर भी उन्होंने जमीनी स्तर पर आक्रामकता जारी रखी। बाइडन ने अपने संस्मरण में यह भी उल्लेख किया कि वे नेतन्याहू पर मौजूद भारी दबाव को समझते थे लेकिन उन्हें इस बात से गहरी निराशा हुई कि नेतन्याहू एक राजनेता की तरह नहीं सोच पाए। बाइडन के अनुसार नेतन्याहू ने इजराइल की दीर्घकालिक खेतों और सुरक्षा की रक्षा करने की बजाय केवल अपनी अल्पकालिक राजनीतिक जरूरतों और अपनी कुर्सी बचाने को ही शीर्ष पर रखा था। इससे पहले भी बाइडन प्रशासन के कई अधिकारियों ने गजा अभियान को लेकर इस तनाव की पुष्टि की है। पिछले महीने प्रकाशित अपनी किताब ब्रिंक में बाइडन के पूर्व उप सहायक ब्रेट मैकगर्क ने दोनों नेताओं के बीच के टकराव का जिक्र किया था। मैकगर्क की मुताबिक युद्ध से जुड़े बड़े फैसलों जिनमें जुलाई 2024 में हमास नेता इस्माइल हानिया की हत्या भी शामिल थी। उसे लेकर बाइडन और नेतन्याहू के बीच तीखे मतभेद उभरे थे। एक तरफ इजराइल की मौजूदा राजनीति में नेतन्याहू अपनी सत्ता बचाने के लिए जूझ रहे हैं। चुनाव हार चुके हैं। अपने विपक्षी गाजी आयोजन कोर्ट से गुहार लगा रहे तो दूसरी तरफ उनके सबसे बड़े सहयोगी रहे पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडन के इन खुलासों ने गजा युद्ध के दौरान पर्दे के पीछे चल रही कूटनीतिक खींचतान को भी दुनिया के सामने लाकर रख दिया है। सवाल यह उठता है कि नेतन्याहू को लेकर जिस तरीके से अब दिन ब दिन खुलासे हो रहे हैं। क्या नेतन्याहू के लिए इजराइल में आने वाला वक्त और ज्यादा मुश्किल हो जाएगा? क्या नेतन्याहू की सत्ता जाने के साथ–साथ अब उनकी तमाम कार्यशैली को लेकर सवाल उठेंगे? क्या उनकी भी अब उस स्तर पर जाकर जांच होगी जहां ख्से उन्हें कोई सजा मिल सकती है। क्या ईरान से युद्ध में दुनिया की सबसे बड़ी महाशक्ति अमेरिका अब अकेला और बेबस नजर आने लगा? जो अमेरिका और इजराइल तेहरान में सत्ता परिवर्तन यानी रिजीम चेंज का ख्वाब दिख रहे थे आज खुद उन्हीं के मुल्कों की सियासत ने उन्हें बड़ा झटका दे दिया है। पूर्व अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने भारत की धरती से एक ऐसा बयान दिया जिसने वाशिंगटन से लेकर तेल अवीव तक खलबली मचा दी। हिंदुस्तान लीडरशिप समिट में बोलते हुए एंटनी ब्लिंकर ने साफ शब्दों में कहा ईरान को हराने का एकमात्र रास्ता है और वो है जमीनी हमला। यानी लैंड इनविजन। लेकिन अगर अमेरिका ने ऐसा कदम उठाया तो यह उसके लिए एक महाविनाश साबित हो सकता है।

इटली की संसद ने यहूदी–विरोधी भावना से निपटने वाले कानून को दी अंतिम मंजूरी



इटली की संसद ने मंगलवार को देश में यहूदी–विरोधी भावना से निपटने के प्रयासों को मजबूत करने वाले कानून को अंतिम मंजूरी दे दी। हालांकि, इस कानून को लेकर विवाद गहरा गया है कि इससे यहूदी–विरोधी भावना और इजराइल की वैध आलोचना के बीच का अंतर धुंधला हो सकता है। निचले सदन ने 93 के मुकाबले 147 मतों से इस विधेयक को मंजूरी दी, जबकि पांच सांसदों ने मतदान में हिस्सा नहीं लिया। कानून के समर्थकों का कहना है कि यह यहूदी–विरोधी घटनाओं में तेजी से हुई वृद्धि के जवाब में जरूरी कदम है और इससे यहूदी समुदाय के खिलाफ पूर्वाग्रह की पहचान करने तथा उससे निपटने के मौजूदा उपाय मजबूत होंगे। वहीं, आलोचकों का तर्क है कि यहूदी–विरोधी भावना की एक अंतरराष्ट्रीय परिभाषा को कानून में शामिल करने से इजराइल और फलस्तीनियों से जुड़े मुद्दों पर राजनीतिक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सीमित हो सकती है। हमास के सात अक्टूबर 2023 के इजराइल पर हमले और उसके बाद गाजा में शुरू हुए युद्ध के बाद यह बहस और महत्वपूर्ण हो गई है। इस संघर्ष के कारण यूरोप में यहूदी–विरोधी घटनाओं की खबरों में वृद्धि हुई है और इजराइल की आलोचना तथा यहूदी–विरोधी भावना के बीच अंतर को लेकर विवाद तेज हुआ है। यह कानून कोई नया अपराध या दंड निर्धारित नहीं करता। इसके बजाय, इसका उद्देश्य यहूदी–विरोधी भावना से निपटने के लिए इटली की मौजूदा रणनीति लागू करने के सिद्धांत तय करना और अंतरराष्ट्रीय होलोकॉस्ट स्मरण गठबंधन (आईएचआरए) की कार्यकारी परिभाषा को औपचारिक मान्यता देना है। विवाद का मुख्य मुद्दा यह है कि क्या इजराइल की आलोचना कभी यहूदी–विरोधी भावना के दायरे में आ सकती है। रोम के शोआह म्यूजियम फाउंडेशन के अध्यक्ष और विधेयक के समर्थक मारियो वेनेजिया ने कहा, सरकार की आलोचना पूरी तरह स्वीकार्य है और इसे प्रोत्साहित किया जाना चाहिए लेकिन इजराइल के अस्तित्व पर ही सवाल उठाना अलग बात है। उन्होंने कहा कि कानून इजराइल की नीतियों की आलोचना पर रोक नहीं लगाता। संसद में चर्चा के दौरान आपराधिक दंड के प्रस्ताव भी हटा दिए गए थे। उनके अनुसार, यह कानून दंडात्मक कदम के बजाय यहूदी–विरोधी भावना के खिलाफ राजनीतिक प्रतिबद्धता का बयान है। दूसरी ओर, एमनेस्टी इंटरनेशनल इटली की वरिष्ठ अधिकारी एनेलीज बाल्दाचिनी ने कहा कि समस्या आईएचआरए की परिभाषा को कानून का आधार बनाने में है। उन्होंने कहा कि एमनेस्टी लंबे समय से इस परिभाषा को अपनाने का विरोध करती रही है, क्योंकि इसके साथ दिए गए कुछ उदाहरणों की ऐसी व्याख्या की जा सकती है, जिससे अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून के तहत संरक्षित राजनीतिक अभिव्यक्ति सीमित हो सकती है। उन्होंने कहा कि आलोचकों ने विदेशों के विश्वविद्यालयों में ऐसे मामलों की ओर भी ध्यान दिलाया है, जहां इस परिभाषा का इस्तेमाल इजराइल और फलस्तीनियों से जुड़े मुद्दों पर बहस दबाने के लिए किए जाने के आरोप लगे हैं। यह बहस ऐसे समय में हो रही है, जब इटली में यहूदी–विरोधी घटनाएं ऐतिहासिक रूप से ऊंचे स्तर पर बनी हुई हैं। सीडीईसी फाउंडेशन के यहूदी–विरोधी भावना निगरानी केंद्र के अनुसार, वर्ष 2025 में ऐसी 963 घटनाएं दर्ज की गईं, जो पिछले वर्ष की तुलना में करीब 10 प्रतिशत अधिक हैं। यह संख्या 2023 के मुकाबले दोगुने से अधिक और 2022 के मुकाबले पांच गुना है। शोधकर्ताओं के मुताबिक, 2026 में भी घटनाओं का स्तर इसी तरह ऊंचा बना हुआ है।

एयरपोर्ट पर ट्रंप को लेने पहुंचे जिनपिंग, फूलों का गुलदस्ता देकर लगाया गले

चीन के शेनझेन पहुंचने पर, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का व्यक्तिगत रूप से स्वागत किया। श्एयर फोर्स वनश से नीचे उतरने के बाद, दोनों नेताओं को हाथ मिलाते और गले मिलते देखा गया। ट्रम्प 33वीं एशिया–प्रशांत आर्थिक सहयोग (।च्म्) आर्थिक नेताओं की बैठक के लिए शेन्ज़ेन में हैं, जो 18 नवंबर से 19 नवंबर तक आयोजित होने वाली है। अमेरिकी राष्ट्रपति गुरुवार (19 नवंबर) को शी और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ अपनी तरह की पहली



त्रिपक्षीय बैठक में हिस्सा लेंगे। शी का यह कदम, इस साल सितंबर में अमेरिकी दौरे पर आए चीनी नेता का ट्रंप द्वारा किए गए स्वागत के जवाब में था।

अमेरिकी राष्ट्रगान बजने के दौरान ट्रंप ने शी के साथ खड़े होकर सलामी दी

ट्रम्प और शी के बीच हवाई अड्डे पर दिखी आत्मीयता के बाद, अमेरिका का राष्ट्रगान बजाया गया; इस दौरान स्वागत दल में शामिल लोग रंग–बिरंगे पॉम–पॉम और चीन तथा अमेरिका के राष्ट्रीय झंडे लहरा रहे थे। उनके आगमन के कुछ पलों को दर्शाने वाले एक वीडियो में, ट्रम्प को चीनी राष्ट्रपति के साथ लाल कालीन पर खड़े होकर सलामी देते हुए देखा गया। अभिवादन के बाद, ट्रम्प और शी लाल कालीन पर आगे बढ़े और वहां मौजूद लोगों का हाथ हिलाकर अभिवादन किया। जब वे स्वागत करने वाले लोगों के पास से गुजरे और अपनी गाड़ियों की ओर बढ़े, तो अमेरिकी राष्ट्रपति ने तालियां बजाईं।

समूह की वेबसाइट के अनुसार, चीन इस साल श्एक साथ समृद्धि के लिए एशिया–प्रशांत समुदाय का निर्माणश थीम के तहत ।च्म् की मेजबानी कर रहा है। इसका उद्देश्य सदस्य देशों को एक साथ लाना है, ताकि प्यूरे क्षेत्र में खुलेपन, नवाचार और सहयोग को बढ़ावा दिया जा सके। एसोसिएटेड प्रेस की रिपोर्ट के अनुसार, इस थीम के अनुरूप, शी और ।च्म् में मौजूद अन्य नेताओं ने व्यापार में अधिक खुला दृष्टिकोण अपनाने का आह्वान किया है। यह रुख ट्रंप की श्अमेरिका फर्स्टश (।उमतपबं थ्पतेज) नीति के विपरीत है, जिसमें टैरिफ बढ़ाने और अन्य संरक्षणवादी कदम उठाने जैसी बातें शामिल थीं। बुधवार को, शी ने व्यापार संरक्षणवाद (जतंकम चतवजमबजपवदपेउ) के खिलाफ खड़े होने का संकल्प लिया, जबकि उनके रूसी समकक्ष पुतिन ने एशिया–प्रशांत आर्थिक सहयोग शिखर सम्मेलन में अपने भाषण के दौरान पश्चिमी प्रतिबंधों की आलोचना की।

बांग्लादेश में फिर भड़की हिंसा की आग!

शेख हसीना के गृह नगर गोपालगंज में पुलिस थाना और सत्तारूढ़ सांसद का घर फूंका, बीएनपी नेता की मौत के बाद बवाल

बांग्लादेश की राजनीति और कानून–व्यवस्था एक बार फिर गंभीर संकट में घिरती नजर आ रही है। अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना के गृह नगर गोपालगंज और उससे सटे इलाकों में मंगलवार रात व्यापक स्तर पर हिंसा भड़क उठी। सत्तारूढ़ दल के एक स्थानीय नेता की झड़प में मौत के बाद बेकाबू हुई भीड़ ने जमकर उत्पात मचाया, एक पुलिस थाने को आग के हवाले कर दिया और सत्तारूढ़ पार्टी के एक सांसद के आवास को भी फूंक दिया। राजधानी ढाका में भी आगजनी और देसी बम विस्फोटों की घटनाओं ने प्रशासन की नींद उड़ा दी है।

पुलिस और मीडिया की खबरों के अनुसार, गोपालगंज से सटे फरीदपुर के भांगा इलाके में पुलिस और अब भंग की जा चुकी हसीना की अवामी लीग के समर्थकों के बीच मंगलवार शाम झड़पों में बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) की किसान शाखा के स्थानीय नेता राजू मोल्ला की मौत हो गई। उन्होंने बताया कि गोपालगंज के तुंगीपारा उपजिले में अवामी लीग के कई संदिग्ध समर्थकों की गिरफ्तारी के बाद हिंसा शुरू हुई थी। यह अशांति जल्द ही जिले के अन्य हिस्सों और पड़ोसी फरीदपुर तक फैल गई। इस दौरान बीएनपी के एक स्थानीय कार्यालय और कई मोटरसाइकिल को आग लगा दी गई। ऑनलाइन समाचार पोर्टल 'बीडीन्यूज24' समेत विभिन्न समाचार पत्रों की खबरों के अनुसार, हमलावरों ने गोपालगंज में बीएनपी सांसद एस एम जिलानी के आवास को निशाना बनाया जिसके बाद उनके परिवार के सदस्य और अन्य लोग वहां से बचकर भाग गए। इस बारे में अभी कोई जानकारी नहीं है कि जिलानी कहां हैं। उनसे फोन पर भी संपर्क नहीं हो सका। हिंसा की यह ताजा घटना गोपालगंज में अवामी लीग के समर्थकों के उग्र प्रदर्शन के महज दो दिन बाद हुई है। उन प्रदर्शनों के दौरान पुलिस



के वाहनों और प्रतिष्ठानों पर हमले किए गए थे। इसके बाद अधिकारियों ने जिले के उपायुक्त, पुलिस अधीक्षक और तुंगीपारा पुलिस थाने के प्रभारी को उनके पदों से हटा दिया था। ढाका में पुलिस ने बताया कि ''अज्ञात उपद्रवियों'' ने रात आठ बजकर 45 मिनट से 11 बजकर 15 मिनट के बीच कम से कम चार खड़ी बसों में आग लगा दी और राजधानी के विभिन्न स्थानों पर देसी बम से विस्फोट किए। हालांकि, इन घटनाओं में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। देश के गृह मंत्री सलाहुद्दीन अहमद ने हिंसा में शामिल लोगों की पहचान करने और उनके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि इसके लिए ऑडियो और वीडियो साक्ष्यों का इस्तेमाल किया जाएगा।



प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।